विशद
श्री रत्नत्रय विधान (लघु)

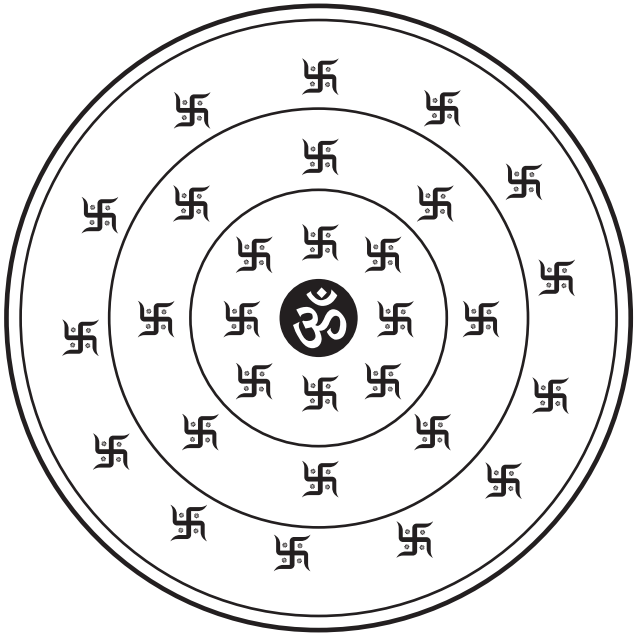

मध्य वलय ॐ
प्रथम वलय - 8
द्वितीय वलय - 8
तृतीय वलय - 13
कुल अर्घ्य - 29

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति - **विशद श्री रत्नत्रय विधान (लघु) हिन्दी + संस्कृत**

रचयिता - प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण - प्रथम-2019, प्रतियाँ - 1000

सम्पादन - मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज

सहयोग - आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
ऐलक श्री विदक्ष सागर जी, क्षुल्लक श्री विसोम सागर जी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी

संकलन - ज्योति दीदी-9829076085, आस्था दीदी
सपना दीदी, आरती दीदी-8700876822

कम्पोजिंग - सपना दीदी-9829127533

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जैन सेठी, जयपुर - 9413336017
2. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी-09810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी - 09416888879
4. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8561023344, 8114417253

पुण्यार्जक - 1. श्री लोकेश जैन, विनय जैन, मनीष, सचिन जैन
जैन आयल मिल, खैरथल, जिला-अलवर (राज.)
मो.: 9414433428
2. अनिल कुमार जैन, धरणेन्द्र जैन
विद्या पुस्तक भण्डार, हॉप सर्किश, अलवर
(राज.) मो.: 9414317931

मुद्रक - बसंत जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, एस.बी.बी.जे.
के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर - मो.: 8561023344

पुन: प्रकाशन सहयोग - मात्र 21.00 रूपये

''रत्नत्रय की प्राप्ति में हेतू है यह रत्नत्रय व्रत की आराधना''

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ही रत्नत्रय कहलाते हैं। इन तीनों की एकता ही मोक्ष का मार्ग है। रत्नत्रय की पूर्णता होने पर आत्मा कर्मबन्ध से छूटकर स्वात्मोपलब्धि को पा लेता है। आत्म सिद्धि का उपाय रत्नत्रय की प्राप्ति है। रत्नत्रय आत्मा की अमूल्य निधि है। रत्नत्रय व्रत भाद्रपद चैत्र और माघ मास में किया जाता है। इन महिनों के शुक्ल पक्ष में द्वादशी तिथि को व्रत धारण करना चाहिए तथा एकाशन करना चाहिए। त्रयोदशी चतुर्दशी और पूर्णिमा का उपवास करना चाहिए। प्रतिपदा को जिनाभिषेक के अनन्तर त्यागी व्रतियों को आहार करवाकर पारणा करना चाहिए।

प्रतिदिन तीनों समय ''ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्रेभ्यो नमः।'' इस मंत्र का समुच्चय जाप एवं पृथक पृथक ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः आदि भी इसी क्रम से जोड़कर करना चाहिए।

13 वर्ष, 8 वर्ष, 3 या 5 वर्ष की अवधि के दौरान समतानुसार व्रत का उद्यापन करना चाहिए। व्रत की उत्कृष्ट विधि तीनों दिन उपवास एवं मध्यम विधि त्रयोदशी पूर्णिमा को एकाशन चौदश को उपवास करने की है।

व्रतों के दिनों को विशेष धर्म ध्यानपूर्वक व्यतीत करें एवं परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर जी द्वारा रचित यह रत्नत्रय पूजा व विधान समय–समय पर करते रहना चाहिए। उद्यापन में भारी धर्म प्रभावना के साथ रत्नत्रय विधान कर दान पुण्य करना चाहिए। रत्नत्रय की कथा भी व्रत के दिनों में पढ़नी चाहिए। कथा इस प्रकार है।

दोहा – राजा वैश्रवण ने लिया, रत्नत्रय पद धार।
सुख इस पर भव के विशद, पा पाए भव पार।।

कथा – जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में कक्ष नाम का एक देश और वीतशोकपुर नाम का एक नगर है। वहाँ एक अत्यन्त पुण्यवान वैश्रवण नाम का राजा रहता था, जो कि पुत्रवत् अपनी प्रजा का पालन करता था।

एक दिन वह (वैश्रवण) राजा बसंत ऋतु में क्रीड़ा के निमित्त उद्यान में यत्र–तत्र सानंद विचर रहा था कि इतने ही में उसकी दृष्टि एक शिला पर विराजमान ध्यानस्थ श्री मुनिराज पर पड़ी। सो तुरंत ही हर्षित होकर वह राजा

श्री मुनिराज के समीप आया और विनययुक्त नमस्कार करके बैठ गया। श्री मुनिराज जब ध्यान कर चुके तो उन्होंने धर्मवृद्धि कहकर आशीर्वाद दिया और इस प्रकार धर्मोपदेश देने लगे –

यह जीव अनादिकाल से मोहकर्मवश मिथ्या श्रद्धान, ज्ञान और आचरण करता हुआ पुनः पुनः कर्मबंध करता और संसार में जन्म–मरणादि अनेक प्रकार दुःखों को भोगता है इसलिए जब तक इस रत्नत्रय (जो कि आत्मा का निज स्वभाव है) की प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक यह (जीव) दुःखों से छूटकर निराकुलता स्वरूप सच्चे सुख व शांति की प्राप्ति नहीं हो सकती, जो कि वास्तव में इस जीव को हितकारी है। इसलिए भगवान ने ''सम्यग्दर्शन–ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः''अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को मोक्षमार्ग कहा है और सच्चा सुख मोक्ष अवस्था ही में मिलता है, इसलिए मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति करना मुमुक्षु जीवों का परम कर्तव्य है।

(1) पुद्गलादि परद्रव्यों से भिन्न निज स्वरूप का श्रद्धान (स्वानुभव) तथा उसके कारण स्वरूप सप्त तत्त्वों और सत्यार्थ देव, गुरु व शास्त्र का श्रद्धान होना सो सम्यग्दर्शन है। यह सम्यग्दर्शन अष्ट अंग सहित और 25 मल दोष रहित धारण करना चाहिए अर्थात् जिन भगवान के कहे हुए वचनों में शंका नहीं करना, संसार के विषयों की अभिलाषा न करना, मुनि आदि साधर्मियों के मलिन शरीर को देखकर ग्लानि न करना, धर्मगुरु के सत्यार्थ तत्त्वों की यथार्थ पहचान करना अर्थात् कुगुरु (रागीद्वेषी भेषी परिग्रही साधु गृहस्थ) कुदेव (रागीद्वेषी भयंकर देव) कुधर्म (हिंसापोषक क्रियाओं) की प्रशंसा भी न करना, धर्म पर लगते हुए मिथ्या आक्षेपों को दूर करना और अपनी बड़ाई व परनिंदा का त्याग करना, सम्यक् श्रद्धान और चारित्र से डिगते हुए प्राणियों को धर्मोपदेश तथा द्रव्यादि देकर किसी प्रकार स्थिर करना और धर्म और धर्मात्माओं में निष्कपट भाव से प्रेम करना और सर्वोपरि सर्व हितकारी श्री दिगम्बर जैनाचार्यों द्वारा बताये हुए श्री पवित्र जिनधर्म का यथार्थ प्रभाव सर्वोपरि प्रकट कर देना ये ही अष्ट अंग है।

इनसे विपरीत शंकादि आठ दोष – 1. जाति, 2. कुल, 3. बल, 4. ऐश्वर्य 5. धन, 6. रूप, 7. विद्या और 8. तप इन आठ के आश्रित हो गर्व करना सो आठ मद, कुगुरु, कुदेव, कुधर्म और कुगुरु सेवक, कुदेव आराधक और कुधर्म धारक, ये छः अनायतन और देवमूढता, लोकमूढ़ता पाखण्ड मूढ़ता इस प्रकार ये पच्चीस सम्यक्त्व के दूषण है। इससे सम्यक्त्व का एकदेश घात होता है इसलिए इन्हें त्याग देना चाहिए।

(2) पदार्थों के यथार्थ स्वरूप को संशय, विपर्यय व अनध्यवसाय आदि दोषों से रहित जानना सो सम्यग्ज्ञान है।

(3) आत्मा की निज परिणति (जो वीतराग रूप है) में ही रमण करता है अर्थात् रागद्वेषादि विभाव भावों, क्रोधादि कषायों से आत्मा को अलग करने व बचाने के लिए व्रत, संयम, तपादिक करना सो सम्यक्चारित्र है। इस प्रकार इस रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग को समझकर और उसे स्वशक्ति अनुसार धारण करके जो कोई भव्यजीव बाह्य तपाचरण धारण करता है वही सच्चे (मोक्ष) सुख को प्राप्त होता है।

इस प्रकार रत्नत्रय का स्वरूप कहकर अब बाह्य व्रत पालने की विधि कहते है–

भादों, माघ और चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में, तेरस, चौदस और पूनम इस प्रकार तीन दिन यह व्रत किया जाता है और 12 को व्रत की धारणा तथा प्रतिपदा को पारणा किया जाता है अर्थात् 12 को श्री जिन भगवान की पूजनाभिषेक करके एकाशन (एकभुक्त) करे और फिर मध्याह्नकाल की सामायिक करके उसी समय से चारों प्रकार के (खाद्य, स्वाद्य, लेह्य और पेय) आहार तथा विकथाओं और सब प्रकार के आरंभों का त्याग करें। इस प्रकार तेरस, चौदस और पूनम तीन प्रोषध दिन (प्रोषध उपवास) करे और प्रतिपदा (पडवा) को श्री जिनदेव के अभिषेक पूजन के अनन्तर सामायिक करके तथा किसी अतिथि वा दु:खित–भूखित को भोजन कराकर भोजन करे, इस दिन भी एकभुक्त ही करना चाहिए।

इन व्रतों के पाँचों दिनों में समस्त सावद्य (पाप बढ़ाने वाले) आरम्भ और विशेष परिग्रह का त्याग करके अपना समय सामायिक, पूजा, स्वाध्यायादि धर्मध्यान में बितावे। इस प्रकार यह व्रत 12 वर्ष तक करके पश्चात् उद्यापन करे और यदि उद्यापन की शक्ति न होवे तो दूना व्रत करे, यह उत्कृष्ट व्रत की विधि है।

यदि इतनी भी शक्ति न होवे तो बेला करे या कांजी आहार करे तथा आठ वर्ष करके उद्यापन करे यह मध्यम विधि है और जो इतनी शक्ति न होवे तो एकासना करके करे और तीन ही वर्ष या पाँच वर्ष तक करके उद्यापन करे, यह जघन्य विधि है। सो स्वशक्ति अनुसार व्रत धारण कर पालन करे। नित्य प्रतिदिन में त्रिकाल सामायिक तथा रत्नत्रय पूजन विधान करे और तीन बार

इस व्रत का जाप्य जपे अर्थात् 'ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः' इस मंत्र की 108 बार जाप जपे, तब एक जाप्य होती है।

इस प्रकार व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करे अर्थात् श्री जिनमंदिर में जाकर महोत्सव करें। छत्र, चमर, झारी, कलश, दर्पण, पंखा, ध्वजा और ठोना आदि मंगल द्रव्य चढ़ावें, चन्दोवा बंधावे और कम से कम तीन शास्त्र मंदिर में पधरावे, प्रतिष्ठा करें, उद्यापन के हर्ष में विद्यादान करें, पाठशाला, छात्रावास, अनाथालय, पुस्तकालय आदि संस्थाएं ध्रौव्यरूप से स्थापित करें और निरन्तर रत्नत्रय की भावना भाता रहे।

इस प्रकार श्री मुनिराज ने राजा वैश्रवण को उपदेश दिया सो राजा ने सुनकर श्रद्धापूर्वक इस व्रत को यथाविधि पालन कर किया, पूर्ण अवधि होने पर उत्साह सहित उद्यापन किया।

पश्चात् एक दिन वह राजा एक बहुत बड़े बड़ के वृक्ष को जड़ से उखड़ा हुआ देखकर वैराग्य को प्राप्त हुआ और दीक्षा लेकर अंत समय समाधिमरण कर अपराजित नामक विमान में अहमिन्द्र हुआ और फिर वहाँ से चयकर मिथिलापुरी में महाराजा कुंभराज के यहाँ, सुप्रभावती रानी के गर्भ से मल्लिनाथ तीर्थंकर हुआ सो पंचकल्याणक को प्राप्त होकर अनेक भव्य जीवों को मोक्षमार्ग में लगाकर आप परम धाम (मोक्ष) को प्राप्त हुए।

इस प्रकार वैश्रवण राजा ने व्रत पालन कर स्वर्ग के, मनुष्यों के सुख को प्राप्त कर मोक्षपद प्राप्त किया और सदा के लिए जन्म–मरणादि दुखों से छुटकारा पाकर अविनाशी स्वाधीन सुखों को प्राप्त हुए। इसलिए जो नर–नारी मन, वचन, काय से इस व्रत की भावना भाते हैं अर्थात् रत्नत्रय को धारण करते हैं, वे भी राजा वैश्रवण के समान स्वार्गादि मोक्ष सुख को प्राप्त होते हैं।

''जम्बू द्वीप विदेह क्षेत्र में, कक्ष नाम का देश महान।
वीतशोकपुर में वैश्रवण नृप, रत्नत्रय व्रत धार प्रधान।।
स्वर्ग सुखों को पाने वाला, देव हुआ अहमिन्द्र विशेष।
स्वर्गों के सुख भोग 'विशद' कर, मल्लिनाथ जी हुए जिनेश।।''

(संकलन प्रयास – मुनि विशाल सागर)

मुक्ति का साधन

सद्दृष्टि ज्ञान वृत्तानी, धर्मं धर्मेश्वरा विदुः।
यदीय प्रत्यनीकानि, भवंति भवपद्धतिः।।3।।र. श्रा.

धर्म के ज्ञाता जिनेन्द्र भगवान ने सम्यग्दर्शन-सम्यक्ज्ञान-सम्यग्चारित्र को ही धर्म कहा है इन तीनों की पूर्णता ही मोक्ष मार्ग है इसके विपरीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान, मिथ्याचारित्र को संसार का कारण बताया है चाहे श्रावक हो या श्रमण अथवा तीर्थकर ही क्यों न हों जन्म मरण से छुटकारा पाने के लिए मोक्ष को प्राप्त करने के लिए रत्नत्रय धारण ही करना पढ़ेगा रत्नत्रय प्राप्ति की भावना से रत्नत्रय भी किए जाते हैं। यह रत्नत्रय साल में तीन बार आते हैं पर्यूषण पर्व के अंत में होते हैं जिसको तेला भी कहा है सभी श्रावक श्राविका शादी के पहले कर लेते ऐसा कोई नियम नहीं कि शादी के पहले ही करें तेला पूर्ण होने पर उद्यापन में यह विधान करें। परम पूज्य क्षमा मूर्ति प्रज्ञा श्रमण कवि हदय आचार्य गुरुदेव **श्री विशद सागर जी महाराज** ने यह कृति 'लघु रत्नत्रय विधान' मुक्तीरूपी महल के इच्छुक श्रावको के लिए चाबी के समान है।

गुरुदेव ने अनेक कृतियों के लेखन कार्य अपनी प्रज्ञा के माध्यम से किया गुरुदेव की कृतियों को जो एक बार पढ़ लेता उसकी बार-बार पढ़ने की इच्छा जागृत होती है गुरुदेव आपकी लेखनी युगों युगों तक निर्वाध रूप से चलती रहे हम सब भव्य जीव प्रभु की पूजा आराधना करते रहें आप शीघ्र ही रत्नत्रय की पूर्णता को प्राप्त करें। इसी भावना के साथ गुरुदेव के श्री चरणों त्रय भक्ति पूर्वक नमोस्तु।

कभी इनका हुआ हूँ मैं, कभी उनका हुआ हूँ मैं।
खुद के लिए कोशिश नहीं की, मगर सबका हुआ हूँ मैं।।
मेरी हस्ती बहुत छोटी, मेरा रुतवा नहीं कुछ भी।
हे गुरुदेव ऐसी सामर्थ दे, डूबते के लिए तिनका बनूं मैं।।

सपना दीदी
संघस्थ- पू. आचार्य गुरुदेव विशद सागर जी महराज
मोबाईल : 9829127533

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु विद्यमान विशंति जिन अनन्तसिद्ध निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निव. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निव. स्वाहा।

दोहा - शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा - पुष्पांजलिं करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शास्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा - अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धिं सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)।।

रत्नत्रय पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु के प्रति श्रद्धा, कहलाए सम्यक् श्रद्धान।
संशय विभ्रम औ विमोह से, रहित जानिए सम्यक् ज्ञान।।
पंच महाव्रत समिति गुप्तित्रय, तेरह विध चारित्र महान।
रत्नत्रय है मोक्ष का मारग, सम्यक् धर्म का है आह्वान।

दोहा - दर्श ज्ञान चारित्र यह, रत्न कहे शुभ तीन।
मन मेरा इनमें 'विशद', रहे सदा ही लीन।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज - माता तू दया करके.....

जिसको अपना माना, उसने संताप दिया।
यह समझ नहीं आया, फिर भी क्यों राग किया।।
रत्नत्रय धर्म विशद, है जग जन उपकारी।
हम पूज रहे पावन, जग में मंगलकारी।। 1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भव-भव में हे स्वामी!, हमने संताप सहा।
अब सहा नहीं जाये, प्रभु मैटो द्वेष महा।।
रत्नत्रय धर्म विशद, है जग जन उपकारी।
हम पूज रहे पावन, जग में मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

तन-धन-परिजन जो हैं, सब नश्वर है माया।
जिस तन में हम रहते, वह क्षण भंगुर काया।।
रत्नत्रय धर्म विशद, है जग जन उपकारी।
हम पूज रहे पावन, जग में मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह काम लुटेरा है, शास्वत गुण लूट रहा।
हम मौन खड़े निर्बल, ना हमसे छूट रहा।।

रत्नत्रय धर्म विशद, है जग जन उपकारी।
हम पूज रहे पावन, जग में मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो कामबाणविधवंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

इस क्षुधा रोग से हम, सदियों से सताए हैं।
व्यंजन की औषधि खा, ना तृप्ती पाए हैं।।
रत्नत्रय धर्म विशद, है जग जन उपकारी।
हम पूज रहे पावन, जग में मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वा.।

हम पर में खोए हैं, पर की महिमा गाई।
इस मोह बली ने प्रभु, निज की सुधि विसराई।।
रत्नत्रय धर्म विशद, है जग जन उपकारी।
हम पूज रहे पावन, जग में मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.स्वा.।

कर्मों की आंधी से, चेतन गृह बिखर गया।
तव दर्शन करके प्रभु, मम चेतन निखर गया।।
रत्नत्रय धर्म विशद, है जग जन उपकारी।
हम पूज रहे पावन, जग में मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

प्रभु पाप बीज बोए, शिव फल कैसे पाएं।
तव अर्चा करके हम, प्रभु सिद्धालय जाए।।
रत्नत्रय धर्म विशद, है जग जन उपकारी।
हम पूज रहे पावन, जग में मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

वसु कर्मों ने मिलकर, जग में भरमाया है।
अब शिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाया है।।
रत्नत्रय धर्म विशद, है जग जन उपकारी।
हम पूज रहे पावन, जग में मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा - शांती धारा कर मिले, निज में शांति अपार।
अर्चा करते भाव से, हे प्रभु! बारम्बार।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा - कर्म किए हमने कई, होकर के अज्ञान।
रत्नत्रय को धारकर, पाना शिव सोपान।।

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य-ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा - थाल भरा वसु द्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, गाते हम जयमाल।।

।। शुम्भू-छन्द।।

मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, रत्नत्रय शुभ धर्म कहा।
जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष महा।।
प्रथम रत्न है सम्यक् दर्शन, करना तत्त्वों पर श्रद्धान।
निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान्।। 1।।
श्रद्धा हीन ज्ञान चारित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।
कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता है सारा व्यर्थ।।
गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग के जीवों का उपकार।। 2।।
ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान।
पुद्गल अर्ध परार्वतन में, जीव करे निश्चय कल्याण।।
सम्यक्श्रद्धा पूर्वक सम्यक्, चारित में जो करते वास।
वस्तु तत्त्व का निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का ह्रास।।3।।
निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।
निजानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान।।
कर्मों का संवर हो जिससे, आश्रव का हो पूर्ण विनाश।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवलज्ञान प्रकाश।। 4।।
रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे प्राप्त।
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त।।

अर्न्तमन की यही चाहना, रत्नत्रय का होय विकास।
कर्म निर्जरा करें विशद हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास।।5।।

दोहा - तीनों लोकों में कहा, रत्नत्रय अनमोल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, बोल सके जय बोल।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - जिसने भी इस लोक में, पाया यह उपहार।
अनुक्रम से उनको मिला, विशद मोक्ष का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री सम्यग्दर्शन पूजन

स्थापना

सम्यक् दर्शन रहा लोक में, भवि जीवों को तारण हार।
देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा, धारे प्राणी बारम्बार।।
सप्त तत्त्व का श्रद्धा धारी, पाए अतिशय भेद विज्ञान।
सम्यक् श्रद्धा के जगते ही, प्राणी पाए सम्यक् ज्ञान।।

दोहा - विशद भावना है यही, जगे हृदय श्रद्धान।
हृदय कमल में आज हम, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शन! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

निर्मल यह नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, शिव पद में धाम बनाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन शुभ यहां चढ़ाएँ, भव का संताप नशाएँ।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, शिव पद में धाम बनाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, शिव पद में धाम बनाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय अक्षयपदप्राप्ते अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, शिव पद में धाम बनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, हम क्षुधा नशाने आए।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, शिव पद में धाम बनाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में दीप जलाएँ, हम मोह से मुक्ती पाएँ।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, शिव पद में धाम बनाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

यह धूप जलाने लाए, हम कर्म नशाने आए।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, शिव पद में धाम बनाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल सरस चढ़ाते भाई, जो गाए मोक्ष प्रदायी।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, शिव पद में धाम बनाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
हम सद् श्रद्धान जगाएँ, शिव पद में धाम बनाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - तिंहु जग शांतीकर विशद, गाए जिन तीर्थेश।
शांती धारा कर चरण, नशते कर्म अशेष।।

शान्तये शांति धारा

दोहा - पुष्पांजलि करने यहाँ, सुरभित लाए फूल।
कर्म श्रृंखला जो रही, हो जाए निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा - अष्ट अंग सम्यक्त्व के, देते जिनको अर्घ्य।
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने सुपद अनर्घ्य।।

।। अथ प्रथमवलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

नि:शंकितादि आठ अंग के अर्घ्य

।। छन्द-जोगीरासा ।।

देव शास्त्र गुरू जैन धर्म में, शंका मन में आवे।
दोष करें सम्यक्दर्शन में, भव वन में भटकावे।।
हो निशंक जिन धर्म वचन में, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक्चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।1।।

ॐ ह्रीं शंकामल-दोष रहित नि:शंकित गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

कर्मवशी जो अंत सहित है, बीज पाप का गाया।
भव सुख की चाहत करना ही, कांक्षा दोष कहाया।।
यह सुख वांछा तजने वाला, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक्चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।2।।

ॐ ह्रीं कांक्षितमल-दोष रहित नि:कांक्षित गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य नि.स्वा.।

है स्वभाव से देह अपावन, रत्नत्रय से पावन।
त्याग जुगुप्सा गुण में प्रीति, मुनि तन है मन भावन।।
ग्लानि को तजने वाला ही, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक्चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।3।।

ॐ ह्रीं विचिकित्सामल-दोष रहित निर्विचिकित्सा गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

कुपथ पंथ पंथी की स्तुति, और प्रशंसा करना।
भव दुख का कारण है भाई, दर्शन दोष समझना।।
करें मूढ़ की नहीं प्रशंसा, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक्चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।4।।

ॐ ह्रीं मूढ़दृष्टीमल-दोष रहित अमूढ़दृष्टी गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य नि.स्वा.।

स्वयं शुद्ध है मोक्ष का मारग, मोही दोष जगावे।
धर्म की निन्दा होय जहां यह, दर्शन दोष कहावे।।
अवगुण ढाके दोषी जन के, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक्चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।5।।

ॐ ह्रीं अनुपगूहन मल-दोष रहित उपगूहन गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य नि.स्वा.।

सम्यक् दर्शन या चारित्र से, चलित कोई हो जावे।
अज्ञानी भव भ्रमण करे वह, दर्शन दोष लगावे।।
धर्म भाव से उनके मन में, पुनः धर्म उपजावे।
सम्यक्चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।6।।

ॐ ह्रीं अस्थितिकरणमल-दोष रहित स्थितिकरण गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

धर्म और साधर्मी जन में, प्रीति नहीं जो धरते।
सम्यक्दर्शन में वह प्राणी, दोष अनेकों करते।।
वात्सल्य का भाव धरे तो, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक्चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।7।।

ॐ ह्रीं अवात्सल्य मल-दोष रहित वात्सल्य गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य नि.स्वा.।

मिथ्या अरु अज्ञान तिमिर जो, फैला सारे जग में।
समकित में वह दोष लगावे, चले न मुक्ती मग में।।
जैन धर्म को करे प्रकाशित, सद्दृष्टी कहलावे।
सम्यक्चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावे।।8।।

ॐ ह्रीं अप्रभावना मल-दोष रहित प्रभावना गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय अर्घ्य नि.स्वा.।

पूर्णार्घ्य

दोहा - आप्तागम निर्ग्रन्थ मुनि, में हो सद् श्रद्धान।
राही मुक्ती मार्ग के, पावें पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - श्रेष्ठ कहा त्रय लोक में, सम्यक् दर्श त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, जिसकी हम जयमाल।।

।। तांटक-छन्द ।।

सम्यक्दर्शन रत्न श्रेष्ठ है, मिथ्या मति का करे विनाश।
भेद ज्ञान जागृत करता है, जीव तत्त्व का करे प्रकाश।। 1।।
जिन वच में शंका न धारे, लोकाकांक्षा से हो हीन।
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति किंचित्, ग्लानि से जो रहे विहीन।।2।।
देव धर्म गुरु के स्वरूप का, निर्णय करते भली प्रकार।
दोष ढाकते गुण प्रगटित कर, हुआ धर्म गुरु के आधार।। 3।।

श्रद्धा चारित से डिगते जो, स्थित करते निज स्थान।
संघ चतुर्विध के प्रति मन से, वात्सल्य जो करें महान्।।4।।
धर्म प्रभावना करते नित प्रति, तपकर आगम के अनुसार।
लोक देव पाखण्ड मूढ़ता, पूर्ण रूप करते परिहार।।5।।
छह अनायतन सहित दोष इन, पच्चीसों से रहे विहीन।
द्रव्य तत्त्व के श्रद्धा धारी, सप्त भयों से रहते हीन।।6।।

दोहा - दर्शन के शुभ आठ गुण, संवेगादि महान।
मैत्री आदिक भावना, श्रद्धा के स्थान।।

ॐ ह्रीं अष्ट मल-दोष रहित अष्ट गुणोपेत सम्यक्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं नि.स्वा.।

दोहा - सम्यक् दर्शन लोक में, मंगलमयी महान।
इसके द्वारा भव्य जन, पाते पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री सम्यग्ज्ञान पूजन

स्थापना

सम्यकज्ञान के दोष तीन है, संशय विभ्रम अरु अज्ञान।
इनसे रहित ज्ञान जो होवे, वह कहलाए सम्यक् ज्ञान।।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाला, तीन लोक में रहा महान।
विशद भाव से आज हृदय में, करते भाव सहित आह्वान।।

दोहा - हीनाधिकता से रहित, यथायोग्य पहचान।
वस्तू की होना विशद, गाया सम्यक्ज्ञान।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञान! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, अपने त्रय रोग नशाएँ।
हम सम्यक् ज्ञान जगाएँ, भव सिन्धु से मुक्ती पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन भव ताप नशाए, हम यहाँ चढ़ाने लाए।
हम सम्यक् ज्ञान जगाएँ, भव सिन्धु से मुक्ती पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद दायी, हम यहां चढ़ाते भाई।
हम सम्यक् ज्ञान जगाएँ, भव सिन्धु से मुक्ती पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय अक्षयदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

जो काम रोग विनशाए, प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाए।
हम सम्यक् ज्ञान जगाएँ, भव सिन्धु से मुक्ती पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

प्रभु क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।
हम सम्यक् ज्ञान जगाएँ, भव सिन्धु से मुक्ती पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पावन ये दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम सम्यक् ज्ञान जगाएँ, भव सिन्धु से मुक्ती पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित हम धूप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
हम सम्यक् ज्ञान जगाएँ, भव सिन्धु से मुक्ती पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

प्रभु मोक्ष महाफल पाएँ, फल यहाँ चढ़ा हर्षाएँ।
हम सम्यक् ज्ञान जगाएँ, भव सिन्धु से मुक्ती पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

शुभ अर्घ्य बनाकर लाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
हम सम्यक् ज्ञान जगाएँ, भव सिन्धु से मुक्ती पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं. निर्व. स्वाहा।

दोहा - विशद शांति करके मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

शान्तये शांति धारा

दोहा - पुष्पों से पुष्पांजलि, करते हैं हम आज।
भव सिन्धू से पार हो, पाएँ मुक्तीराज।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

द्वितीय वलयः

दोहा - अष्ट अंग सद्ज्ञान के, पाने सम्यक् ज्ञान।
पुष्पांजलि करते यहां, जिसकी महति महान।।

।। अथ द्वितिय वलयोपरिपुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

अष्टांग सम्यग्ज्ञान के अर्घ्य

शुद्ध शब्द उच्चारण करते भाई रे! व्याकरण अनुसार बोलते भाई रे!।
शब्दाचार का धारी जानो भाई रे! जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।1।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित शब्दाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शब्दों के अनुसार भाव से भाई रे, अर्थ लगावें सही चाव से भाई रे!।
अर्थाचार का धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।2।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित अर्थाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुद्ध शब्द अरु अर्थ लगावें भाई रे!, शब्द अर्थ का ज्ञान लगावें भाई रे!।
उभ्याचार का धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।3।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित उभयाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो सुकाल में ही आगम का भाई रे!, पठन पाठन जो करें भाव से भाई रे!।
कालाचार का धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।4।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित कालाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हाथ पैर अरु वस्त्र शुद्ध हो भाई रे!, विनय करें मन वच तन से जो भाई रे!।
विनयाचार का धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।5।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित विनयाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनवाणी का करें स्वाध्याय भाई रे!, त्याग करें कुछ पूर्ण हुए तक भाई रे!।
उपधानाचार का धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।6।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित उपधानाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंग पूर्व अरु छन्द शास्त्र का भाई रे!, मान त्याग बहुमान धरें शुभ भाई रे!।
बहुमानाचार का धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।7।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित बहुमानाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन गुरु से सद्ज्ञान प्राप्त हो भाई रे!, नाम छिपावें नहीं जो गुरु का भाई रे!।
अनिन्हावाचार का धारी जानो भाई रे!, जैन धर्म की प्रभुता मानो भाई रे!।।8।।

ॐ ह्रीं जिनवर कथित अनिन्हावाचार अंग सहित सम्यक्ज्ञानेभ्यो अर्घ्यं नि. स्व.।

दोहा - संशयादि सब दोष बिन, है जो सम्यक्ज्ञान।
जिसकी अर्चा कर रहे, पाने केवल ज्ञान ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - सर्व सुखों का मूल है, जग में सम्यक् ज्ञान।
जयमाला गाते परम, पाने पद निर्वाण।।

।। चौपाई छन्द ।।

सम्यक्ज्ञान रत्न शुभकारी, भवि जीवों का है उपकारी।
आगम तृतिय नेत्र कहाए, अष्ट अंग जिसके बतलाए।। 1।।
शब्दाचार प्रथम कहलाया, शुद्ध पठन जिसमें बतलाया।
अर्थाचार अर्थ बतलाए, शब्द अर्थ अरु उभय कहाए।। 2।।
कालाचार सुकाल बताया, विनयाचार विनय युत गाया।
नाम गुरु का नहीं छिपाना, यह अनिह्नवाचार बखाना।। 3।।
नियम सहित उपधान कहाए, आगम का बहुमान बढ़ाए।
द्वादशांग जिनवाणी जानो, जन-जन की कल्याणी मानो।। 4।।
ॐ कारमय जिनवर गाए, झेलें गणधर चित्त लगाए।
आचार्यों ने उनसे पाया, भव्यों को उपदेश सुनाया।। 5।।
लेखन किया ग्रन्थ का भाई, वह मां जिनवाणी कहलाई।
वृहस्पति भी महिमा को गाए, फिर भी पूर्ण नहीं कह पाए।।6।।
बालक कितना जोर लगाए, सागर पार नहीं कर पाए।
सागर से भी बढ़कर भाई, 'विशद' ज्ञान की महिमा गाई।। 7।।

दोहा - पंच भेद सद्ज्ञान के, मतिश्रुत अवधि महान।
मनः पर्यय कैवल्य शुभ, बतलाए भगवान।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - सम्यक् ज्ञान महान है, शिव सुख का आधार।
उभय लोक सुखकर विशद, मोक्ष महल का द्वार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री सम्यक्चारित्र पूजन

स्थापना

तेरह विध चारित्र कहा है, भवसिन्धू से तारण हार।
पंच महाव्रत समिति गुप्ति त्रय, रहे लोक में मंगलकार।।
सम्यक् चारित पाने वाले, करें आत्मा का कल्याण।।
हृदय कमल में सम्यक् चारित, का हम करते हैं आह्वान्।।

दोहा - सम्यक् चारित जीव का, है पावन हितकार।
अतः हृदय में धारते, जो हम बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्र! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तांटक छन्द)

भक्ति भाव का उत्तम जल ले, धारा तीन कराते हैं।
रोग नशें जन्मादिक मेरे, विशद भावना भाते हैं।।
सम्यक् चारित धारण करके, अपने कर्म नशाएँगे।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सीधे शिवपुर जाएँगे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञान का शीतल चन्दन, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
नाश होय संसार ताप अब, मन में भाव जगाएँ हैं।।
सम्यक् चारित धारण करके, अपने कर्म नशाएँगे।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सीधे शिवपुर जाएँगे।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धा भक्ती के अक्षत से, पूजा यहाँ रचाते हैं।
अक्षय पदवी पा जाएँ हम, अतः विशद गुण गाते हैं।।
सम्यक् चारित धारण करके, अपने कर्म नशाएँगे।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सीधे शिवपुर जाएँगे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प मनोहर लिए हाथ में, श्रद्धा भाव जगाते हैं।
काम रोग को नाश करें अब, यही भावना भाते हैं।।

सम्यक् चारित धारण करके, अपने कर्म नशाएँगे।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सीधे शिवपुर जाएँगे।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्राय कामवाणविधवंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् रत्नत्रय गुण के शुभ, यह नैवेद्य बनाए हैं।
क्षुधा शांत हो जाए मेरी, विशद भावना भाए हैं।।
सम्यक् चारित धारण करके, अपने कर्म नशाएँगे।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सीधे शिवपुर जाएँगे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन गुण का दीप जलाकर, ज्ञान को ज्योति जलाएँ हैं।
मोह महातम हो विनाश हम, अर्चा करने आए हैं।।
सम्यक् चारित धारण करके, अपने कर्म नशाएँगे।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सीधे शिवपुर जाएँगे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप बनाई अष्ट कर्म की, जिसको यहाँ जलाते हैं।
मोक्ष महल की राह प्राप्त हो, द्वार आपके आते हैं।।
सम्यक् चारित धारण करके, अपने कर्म नशाएँगे।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सीधे शिवपुर जाएँगे।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ती का फल श्रेष्ठ लोक में, वह पाने हम आए हैं।
पाएँ शिव फल अक्षय है जो, ऐसे भाव जगाएँ हैं।।
सम्यक् चारित धारण करके, अपने कर्म नशाएँगे।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सीधे शिवपुर जाएँगे।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भटक रहे हम शास्वत पद बिन, उसकी निधि ना पाए हैं।
यह संसार भ्रमण तजकर अब, निज पद पाने आए हैं।।
सम्यक् चारित धारण करके, अपने कर्म नशाएँगे।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, सीधे शिवपुर जाएँगे।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।
अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार।।

शान्तये शांति धारा

दोहा - करते हम पुष्पांजलि, विशद भाव के साथ।
मुक्ती पथ पर हम बढे, हे त्रिभुवन के नाथ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तृतिय वलयः

दोहा - सम्यकचारित धार कर, पाना है शिवधाम।
अतः भाव से हम यहाँ, करते विशद प्रणाम।।

।। अथ तृतिय वलयोपरिपुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

तेरह विधिचारित्र (चौपाई)

छह निकाय के जीव बताए, मन वच तन से उन्हें बचाए।
परम अहिंसा व्रत का धारी, आयु काल पाले अविकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसामहाव्रत सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

सत्य वचन बोलें हितकारी, महाव्रती होते अनगारी।
सत्य महाव्रत यही बताया, जैनागम में ऐसा गाया।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यमहाव्रत सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

हीनादिक वस्तू न देवे, बिन आज्ञा के कुछ न लेवे।
व्रत अचौर्य धारी कहलावे, जिन भक्ति कर दोष नसावे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचौर्यमहाव्रत सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

स्वपर अंग में राग न धारे, बह्मचर्य व्रत पूर्ण सम्हारे।
स्त्री में न प्रीति लगावे, संयम द्वारा कर्म नसावे।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्यमहाव्रत सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

बाह्यभ्यतंर परिग्रह त्यागे, आंकिंचन में ही नित लागे।
परम अपरिग्रह व्रत को धारे, नव कोटी से राग निवारे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपरिग्रहमहाव्रत सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छन्द)

नयन से दिन में देख यथावत, भूमी दण्ड प्रमाण।
ईर्या समिति तज के प्रमाद नर, करें स्व-पर कल्याण।।
व्रत के धारी धार समिति यह, पालें पंचाचार।
प्रगट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईर्यासमिति सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय वचन कहते हैं, बोले शब्द सम्हार।
भाषा समिति प्रयत्नकर पालें, मन के दोष निवार।।
व्रत के धारी धार समिति यह, पालें पंचाचार।
प्रगट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाषासमिति सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

अन्नादनोत्पादनआदि, छियालिस दोष निवार।
ध्यान सिद्धि के हेतू भोजन, लेते मुनि अनगार।।
व्रत के धारी धार समिति यह, पालें पंचाचार।
प्रगट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऐषणासमिति सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

वस्तू के आदान निक्षेप में, रखते यत्नाचार।
देखभाल करके प्रमार्जन, धारे समीति सम्हार।।
व्रत के धारी धार समिति यह, पालें पंचाचार।
प्रगट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदाननिक्षेपणसमिति सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

एकान्त ठोस निर्जन्तुक भू में, मल का करे निहार।
समिति कही व्युत्सर्ग जिनेश्वर, होकर के अविकार।।
व्रत के धारी धार समिति यह, पालें पंचाचार।
प्रगट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्युतसर्गसमिति सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

तर्ज - नन्दीश्वर पूजा

हम रागादि के भाव, दूषण नाश करें।
प्रभु धार समाधि भाव, निज में वास करें।।
हो मनोगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोगुप्तिसहित सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

तज कर दुर्नय के शब्द, वचन को गुप्त करें।
चेतन में करके वास, सारे दोष हरें।।
हो वचनगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचनगुप्ति सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

तन की चेष्टा का त्याग, स्थिर आसन हो।
हो निज स्वभाव में वास, निज पर शासन हो।।
हो मनोगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।। 13।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायगुप्ति सहितसम्यग्चारित्राय अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

पंच महाव्रत पंचसमीति, तीन गुप्तियों को मुनि धार।
तेरह विधि चारित्र धारने, वाले मुनिजन मंगलकार।।
रत्नत्रय को पाने वाले, सम्यक् चारित्र पाते हैं।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर, मोक्ष महल को जाते हैं।। 14।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्चारित्रधारकाय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा - तेरहविध चारित्र है, अतिशय पूज्य त्रिकाल।
सम्यक् चारित्र की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

।। सखी छन्द ।।

शुभ सम्यक् चारित्र जानो, तुम रत्न अनोखा मानो।
जो पाचों पाप नशाएँ, फिर पंच महाव्रत पाएँ।। 1।।
हो पंच समिति के धारी, त्रय गुप्ती के अधिकारी।
जो त्रय हिंसा के त्यागी, हैं देशव्रती बड़भागी।। 2।।
मुनि सब हिंसा के त्यागी, विषयों में रहे विरागी।
निज आतम ध्यान लगाते, तब निजानंद सुख पाते।। 3।।
सामायिक संयमधारी, मुनिवर होते अविकारी।
छेदोपस्थापना जानो, व्रत शुद्धी जिससे मानो।। 4।।
परिहार विशुद्धी भाई, जिसकी अतिशय प्रभुताई।
जब समवशरण में जावें, अठ वर्ष में ज्ञान जगावें।। 5।।
मुनिवर फिर संयम पावें, न प्राणी कष्ट उठावें।
बादर कषाय जब खोवे, तब सूक्ष्म साम्पराय होवे।। 6।।
उपशम क्षय जब हो जावे, तब यथाख्यात प्रगटावें।
संयम यह पाँचों पाए, वह केवलज्ञान जगाए।। 7।।
हो सर्व कर्म के नाशी, बन जाते शिवपुर वासी।
वे सुख अनन्त को पाते, न लौट यहाँ फिर आते।। 8।।

दोहा - सम्यक् चारित्र प्राप्त कर, करें कर्म का अन्त।
ज्ञान शरीरी सिद्ध जिन, हुए अनन्तानन्त।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - भाते हैं यह भावना, पूर्ण करो भगवान।
सम्यक् चारित प्राप्त हो, सुपद मिले निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

जाप - ॐ ह्रीं सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो नमः

समुच्चय जयमाला

दोहा - सद्दर्शन ज्ञानाचरण, सम्यक् तप के साथ।
जयमाला गाते यहाँ, झुका भाव से माथ।।

।। पद्धड़ी-छन्द ।।

शुभ सम्यक् दर्शन ज्ञान सार, चारित्र सुतप का नहीं पार।
जो रत्नत्रय धारें ऋशीष, वे तीन लोक के बने ईश।। 1।।
वे पाते हैं शिवपथ प्रधान, जो रत्न धारते यह महान्।
जो रत्नत्रय से हीन जीव, वह पाते जग के दुख अतीव।। 2।।
वह चतुर्गती का भ्रमण जाल, निर्मित करते हैं तीन काल।
जो तीनों लोकों के मंझार, जनते मरते हैं बार-बार।। 3।।
अब जिन गुरुओं का किया दर्श, मन में जगा है बड़ा हर्ष।
आगम से पाया विशद ज्ञान, अब निज आतम का हुआ भान।। 5।।
है रत्नत्रय जग में प्रधान, जो धारे तीर्थंकर महान्।
गणधर भी पाते रत्न तीन, फिर हो जाते हैं निजाधीन।। 6।।
पद चक्रवर्ति का छोड़ भूप, पा रत्नत्रय हो स्वयं रूप।
शुभ रत्नत्रय है तीर्थ धाम, जिनको करता है जग प्रणाम।। 7।।
जो मुक्ति वधू का हृदय हार, अतएव सतत् वह लिए धार।
नर तन जो पाया है विशेष, वह सफल होय व्रत कर विशेष।। 8।।
है आर्ष विधी व्रत की प्रधान, अब मध्यम का करते बखान।
कर एकाशन उपवास तीन, फिर एक भुक्त हो ज्ञान लीन।। 9।।
उत्कृष्टातीत यह है प्रधान, अब मध्यम का करते बखान।
आदिक में करके दो उपवास, फिर एकाशन करके विकास।। 10।।
या आदि अन्त करके उपास, मध्येकासन में करें वास।
अब अन्त विधि जानो विशेष, जिसका वर्णन कीन्हें जिनेश।। 11।।

कर आदि अन्त में एक भुक्त, मध्ये अनशन हो राग मुक्त।
अनशन की शक्ती नहीं होय, तो एक भुक्त हो अल्प सोय।। 12।।
यहतेरह वर्षों तक प्रधान, या नो-त्रय वर्षों कर महान।
फिर उद्यापन करके विधान, या व्रत दूने करना महान।। 13।।
फिर अपनी शक्ती को विचार, शुभ करना अनुपम दान चार।
व्रत रत्नत्रय करके विचार, जो चतुर्गती से करे पार।। 14।।

दोहा - रत्नत्रय आराधना, करके जोड़े हाथ।
वंदन करते भावसे, झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राय नमः जयमाला पूर्णर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा - 'विशद' भाव से भावना, भाते योग सम्हार।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, पाएँ भव से पार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

प्रशस्ति

मध्यलोक के मध्य है जम्बूद्वीप महान्।
आर्य खण्ड देश कुमारत रहा प्रधान।।1।।
जिसकी राजधानी रही दिल्ली जिसका नाम।
न्यू उस्मानपुर में किया, लेखन सविश्राम।।2।।
सम्यक दर्शनज्ञान शुभ सम्यक्चरित्रवान।
रत्नत्रय शुभ कर्म है मुक्तीका सोपान।।3।।
जिसकी पूजा अर्चना हेतू रचा विधान।
व्रत अर्या कर जीवसव पावें पुन्यजिधान।।4।।
वीर नि. पच्चीस सौ रहा चवालिस वर्ष।
श्रावण शुक्ला सप्तमी जगा हृदय में हर्ष।।5।।
मुकुट सप्तमी पर्वशुभ रहा वीर निर्वाण।
पावन रचना पूर्ण कर पाने सम्यकज्ञान।।6।।
लघु श्री तथा प्रमाद वश हुई हो कोई भूल।
ज्ञानी जन पढ़कर करे मूलों को निर्मूल।।7।।
विशद भावना यह रही होवें शांति अपार।
सुख शांती आनन्द हो होवे धर्म प्रचार।।8।।

रत्नत्रय की आरती

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, धर्म कहा शुभकारी।
विशद भाव से करते हैं हम, आरति मंगलकारी।।
धर्म की पाएँ विशद शरण... 2।। टेक।।
हो मिथ्यात्व विनाश कषायें, अनंतानुबंधी जावे।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा हो तब, सम्यक दर्शन पावे।।
उपशम क्षायिक और क्षयोपशम, तीन भेद बतलाए।
तीर्थंकर पद तब ही मिलता, दर्श विशुद्धी पाए।। 1।। धर्म...
सर्व चराचर द्रव्य तत्त्व का, जो है जानन हारा।
भेदज्ञान का साधन अनुपम जग में एक सहारा।।
मति श्रुत अवधि मनः पर्यय शुभ, केवलज्ञान बताए।
सम्यक्दर्शन पाने वाला, ज्ञानी जीव कहाए।। 2।। धर्म...
हिंसादिक पाँचों पापों से, जो विरक्त हो जावे।
देश सर्व व्रत पाने वाला, चारित्री कहलावे।।
गुप्ति समिति धर्मानुप्रेक्षा, परिषह जय शुभ जानो।
संवर और निर्जरा तप से, होती है यह मानो।। 3।। धर्म...
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य शुभ गाया।
संयम तपस्त्याग आकिंचन, ब्रह्मचर्य बतलाया।।
दश धर्मों को धारण करके, निज सौभाग्य जगाए।
कर्म नाशकर अपने सारे, सिद्ध शिला को पाए।। 4।। धर्म...
मोक्षमार्ग में सम्यक्दर्शन, नाविक है मनहारी।
सम्यक् ज्ञान कहा इस जग में, अनुपम विस्मयकारी।।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, चारित्र की बलिहारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त हो, अनुपम अतिशयकारी।। 5।। धर्म...

रत्नत्रय चालीसा

दोहा - रत्नत्रय शिव मार्ग का, पावन है सोपान।
चालीसा जिसका यहाँ, पढ़ते विशद महान।।

।। चौपाई ।।

सम्यक दर्शन रत्न निराला, जो श्रद्धान कराने वाला।। 1।।
जिसकी महिमा जग से न्यारी, पावन है जो मंगलकारी।। 2।।
मोक्ष मार्ग में बने सहारा, योग त्रय से नमन हमारा।। 3।।
सम्यक् दर्शन जब हो जाए, भव का बीज स्वयं खो जाए।। 4।।
मोक्ष महल की पहली सीढ़ी, पाए हम पीढ़ी दर पीढ़ी।। 5।।
सम्यक दर्शन जो पा जाए, दर्श मोह उसका खो जाए।। 6।।
तत्त्वों का दिग्दर्श कराए, पावन भेद ज्ञान करवाए।। 7।।
अष्ट अंग युत जो बतलाया, दोष पच्चीसों रहित कहाया।। 8।।
नि:शंकित नि:कांक्षाकारी, निर्विचिकित्स गुण सम्यक्धारी।। 9।।
उपगूहन थितिकरण निराला, वात्सल्य अंग प्रभावना वाला।। 10।।
इनके उल्टे दोष कहाए, शंकाकांक्षादिक वसु गाए।। 11।।
ज्ञानरूप ख्याती मय जानो,कुल जाती मद त्यागें मानो।। 12।।
बल तप ऋद्धी मद परिहारी, होते पावन सम्यक् धारी।। 13।।
लोक मूढ़ता देव कहाए, गुरु मूढ़ता ना रह पाए।। 14।।
षट् अनायतन तजने वाले, निज गुण के होते रखवाले।। 15।।
पंच लब्धियाँ पावन पावें, वे सम्यक् श्रद्धान जगावें।। 16।।
सम्यक् ज्ञान रत्न मनहारी, जो है जन-जन का उपकारी।। 17।।
आगम तीजा नेत्र निराला, पावन आठों अंगों वाला।। 18।।
शब्दाचार प्रथम कहलाए, अर्थाचार अर्थ बतलाए।। 19।।
उभयाचार जगत उपकारी, कालाचार काल शुभकारी।। 20।।
विनयाचार विनय गुणधारी, उपासकाध्यनांग रहा मनहारी।। 21।।
अनिह्वाचार अंग शुभ जानो, बहुमानांग सुगुण शुभ मानो।। 22।।
द्वादशांग जिनवाणी भाई, जन-जन की हितकारी गाई।। 23।।
ॐकारमय शुभ जिनवाणी, भवि जीवों की है कल्याणी।। 24।।
दिव्य देशना प्रभू खिराए, गणधर झेलें चित्त लगाए।। 25।।

लेखन जैनाचार्य कराए, जो जिनवाणी माँ कहलाए।। 26।।
जो है पापों का परिहारी, यह सम्यक् चारित मनहारी।। 27।।
पंच महाव्रत पावन गाए, पंच समीतियाँ भी कहलाए।। 28।।
तीन गुप्तियाँ भी शुभ जानो, तेरह विधचारित ये मानो।। 29।।
जो हैं त्रस हिंसा के त्यागी, देशव्रती होते बड़भागी।। 30।।
मुनि सब हिंसा के परिहारी, विषयों को तजते अनगारी।। 31।।
निज आतम का ध्यान लगाते, निजानन्द सुख वे मुनि पाते।। 32।।
सामायिक संयम के धारी, मुनिवर होते हैं अविकारी।। 33।।
छेदोपस्थापना संयम जानो, व्रत शुद्धी जिससे हो मानो।। 34।।
है परिहार विशुद्धी भाई, जिसकी है अतिशय प्रभुताई।। 35।।
मुनिवर समवशरण में जाते, आठ वर्ष तक ज्ञान जगाते।। 36।।
फिर हो ये संयम शुभकारी, हिंसा का जो है परिहारी।। 37।।
सूक्ष्म कषाय जहाँ रह जावे, सूक्ष्म सांपराय जो कहलाए।। 38।।
उपशम क्षायिक गुण प्रगटाएँ, अतिशय केवल ज्ञान जगाएँ।। 39।।
होते जो रत्नत्रय धारी, बने 'विशद' शिव के अधिकारी।। 40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव के साथ।
रत्नत्रय निधि प्राप्त कर, बनें श्री के नाथ।।
सुख शान्ती सौभाग्य का, हो जीवन में वास।
इच्छित फल पाएँ 'विशद', होवे पूरी आस।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्-दर्शन-ज्ञान चारित्रेभ्यो नम:।।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कथा
रत्नत्रय पूजा (विधान) संस्कृत

स्थापना

श्रीमंतं सन्मतिं नत्त्वा, श्रीमतः सुगुरुन्नऽपि।
श्रीमदागमतः श्रीमान्, वक्ष्ये रत्नत्रयार्च्चनम्।। 1।।
अनन्तानन्त संसार कर्म सम्बन्ध विच्छदे।
नमस्तस्मै-नमस्तस्मै, जिनाय परमात्मने।। 2।।
ध्रौव्योत्पाद-व्ययानेक तत्त्व सद्दर्शनत्विषे।
नमस्तस्मै-नमस्तस्मै, जिनाय परमात्मने।। 3।।
संसारार्णव मग्नानां यः समुद्धर्तुमीश्वरः।
नमस्तस्मै-नमस्तस्मै, जिनाय परमात्मने।। 4।।
लोकालोक प्रकाशात्माश्-यचैतन्य मयं महा।
नमस्तस्मै-नमस्तस्मै, जिनाय परमात्मने।। 5।।
येन ध्यानाग्निनादग्ध, कर्म कक्ष मल क्षणं।
नमस्तस्मै-नमस्तस्मै, जिनाय परमात्मने।। 6।।
येनात्मात्मानि विज्ञाताः, परं परमिदं वपुः।
नमस्तस्मै-नमस्तस्मै, जिनाय परमात्मने।। 7।।
सर्वानन्दमयो नित्यं सर्व सत्त्व हितंकरः।
नमस्तस्मै-नमस्तस्मै, जिनाय परमात्मने।। 8।।
इत्याद्यनेकधा स्तोत्रै स्तुत्त्वा सज्जिन पुंगवं।
कुर्वे दृग्वोध चारित्रा-चर्चनं संक्षेपतोऽधुना।। 9।।

इत्युच्चार्यपूजन प्रतिज्ञानार्थं रत्नत्रय यंत्रस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

रत्नत्रय विधान

स्थापना

रत्नत्रयं तज्जननाति-मृत्यु-, सर्पत्रयी-दर्पहरं नमामि।
सद्भूषणं प्राप्य भवन्ति शिष्टा, सुक्तेविरूपाकृतयोऽप्य भीष्टाः।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रस्वरूप रत्नत्रय! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

संसार दुरक ज्वलनाव-गूढ, प्रारूढ़ संताप मलोपशान्त्यैः।
सद्दर्शन ज्ञान चारित्र पंक्तेर्-जलस्य-धारां पुरतो ददामि।। 1।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यकदर्शन-ज्ञान त्रयोदश विधचारित्राय जलं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय भूषित भव्य लोके-मसोक मन्तर्गत भावगम्यं।
काश्मीर कर्पूर सुचन्दनाद्यैः, सुगंध गंधै-रहमर्च्ययामि।। 2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यकदर्शन-ज्ञान त्रयोदश विधचारित्राय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

शालीय अक्षय सुपुंज अक्षतै, सुकुन्द पुष्पादिवत् शुद्ध शारै।
सुदर्शन बोध चारित्र युक्त्यै, त्रितयंतऽसंयत यजामिभक्त्या।। 3।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यकदर्शन-ज्ञान त्रयोदश विधचारित्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

विकसित कुसुम कुन्द सत्पत्र सुजात, समूह शोभया कर्पूर नीर।
अलिकुल सुकलित ध्वनि समूह, रत्नत्रय पत्र पवित्रमालया।। 4।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यकदर्शन-ज्ञान त्रयोदश विधचारित्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

प्रसिद्ध सद्द्रव्य मनन्य लभ्यं, वचो गुरूणामिव साधु सिद्धं।
सुदृष्टि सद्बोध चारित्र रत्नत्रयाय नैवेद्य मिदं ददामि।। 5।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यकदर्शन-ज्ञान त्रयोदश विधचारित्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीपै सुकर्पूर पराग भृंगै, रंग-भिरंग द्युति दीप्यमानैः।
सद्दर्शन ज्ञान चारित्र रत्न-त्रयं त्रयावाप्ति करं यजेहं।। 6।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यकदर्शन-ज्ञान त्रयोदश विधचारित्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुगंध धूपै कलागुरुभिः, विशुद्ध संशुंद्ध कर्मं सधूपैः।
सद्दर्शन बोध चारित्र त्रितयं, संधूपयामि संसिद्धयाद्यैः।। 7।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यकदर्शन-ज्ञान त्रयोदश विधचारित्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

पूगै -रनर्घ्यैर्वरनालिकेरै नारंग जाम्बीर कपित्थ पूगैः।
रत्नत्रय तर्पित भव्य लोकं, शक्त्याव लोकं तदहं यजामि।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यकदर्शन-ज्ञान त्रयोदश विधचारित्राय फलं निर्व. स्वाहा।

जल गंधाक्षतै पुष्पैः, चरु दीपै-र्धूपसत्फलैः।
दर्शन बोध चारित्रं त्रितयं त्रेधा यजामहे।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यकदर्शन-ज्ञान त्रयोदश विधचारित्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोहाद्रिसंकट तटी विकट प्रपातं, सम्पादिने सकलसत्त्वहितंकराय।
रत्नत्रयाय शुभ हेति समप्रभाय, पुष्पांजलिं प्रविमलह् यवतारयामि।।

।। मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अथ सम्यक् दर्शन पूजा

स्थापना

परस्यामि मुखी श्रद्धा, शुद्ध चैतन्य रूपतः।
दर्शनं व्यवहारेण, निश्चये नात्मनः पुनः।।1।।
यदधिगम्य नरः शिव सम्पदामधि पदं प्रतिपद्य विरेजिरे।
तदिहमान सतामर सेल सद् दिसतुदर्शन-मष्टविधं मम्।।2।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शन! अत्र मम अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

(अनुष्टुप छन्द) **अनन्तानन्त संसार सागरोत्तारकारणं।**
तीर्थं तीर्थ कृता-मत्र स्थापयामि सुदर्शनं।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शन! अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं।

अष्टांगैरष्टधा पूत-मष्टैक गुण संयुतं।
मदाष्टक विनिर्मुक्तं दर्शनं सन्निधापये।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शन! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अथाष्टक) **सरदिन्दु समाकार सारया जलधारया।**
सम्यग्दर्शन मष्टांगं संयजे संयजावहं।।1।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शनाचार जलं निर्व. स्वाहा।

कर्पूर नीर कश्मीर मिश्र सच्चंदनैघनैः।
सम्यग्दर्शन मष्टांग संयजे संयजावहं।।2।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शनाचार चंदनं निर्व. स्वाहा।

अखण्डै खण्डितानेक दुरितैः शालि तदुलैः।
सम्यग्दर्शन मष्टांग संयजे संयजावहं।।3।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शनाचार अक्षतं निर्व. स्वाहा।

शत पत्र शतानेक चारु चम्पक राजभिः।
सम्यग्दर्शन मष्टांग संयजे संयजावहं।।4।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शनाचार पुष्पं निर्व. स्वाहा।

न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य सन्नाज्यै पुष्टि कारिभिः।।
सम्यग्दर्शन मष्टांग संयजे संयजावहं।। 5।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शनाचार नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

चंचत् कांचन संकाशैः दीपैः सद्दीप्ति हेतुभिः।
सम्यग्दर्शन मष्टांग संयजे संयजावहं।। 6।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शनाचार दीपं निर्व. स्वाहा।

कृष्णागरु महाद्रव्य धूपै संधूपिता शुभैः।
सम्यग्दर्शन मष्टांग संयजे संयजावहं।।7।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शनाचार धूपं निर्व. स्वाहा।

पूग नारंग जम्भीर मातुलिंग फलोत्करैः।
सम्यग्दर्शन मष्टांग संयजे संयजावहं।।8।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शनाचार फलं निर्व. स्वाहा।

जल गंध कुसुम मिश्रं, फल तंदुल कमल कलित ललिताद्यं।
सम्यक्तकाय सुभव्यं, भव्यां कुसुमांजलिं दद्यात।। 9।।

ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः अष्टांग सम्यग्दर्शनाचार अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अंग पूजा

यस्य प्रभावाज्जगतां त्रयेपि, पूज्याभवंतीह घनाजनोघाः।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, निः संकितांगाय नमोस्तु तस्मै।।1।।

ॐ ह्रीं निःशंकित अंगाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुदर्शनं येन बिना प्रयुक्तं, मंतं फलं नैव भवेज्जनानां।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, निःकांक्षितांगाय नमोस्तु तस्मै।।2।।

ॐ ह्रीं निःकांक्षित अंगाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यदं गताः संयम तृक्षसेकी तस्मात्फलं संलभते शरीरी।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, निर्निंदितांगाय नमोस्तु तस्मै।।3।।

ॐ ह्रीं निःर्निन्दतांगाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यदुज्झितं चारु चरित्र-मेतत्, सिद्धयै भवेन्नेवमुनीश्वराणां।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, निर्मूढतांगाय नमोस्तु तस्मै।।4।।

ॐ ह्रीं निर्मूढतांगाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुरेन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्र वृन्द्यै, वद्यं पदं यद्धसतो लभंते।
सुदुर्लभायामर पूजितायोपगूहनांगाय नमोस्तु तस्मै।।5।।

ॐ ह्रीं उपगूहनांगाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भवन्ति वृद्धा गुण वृद्धि सिद्धा, नेनानुवृद्धाजगति प्रसिद्धा।
सुदुर्लभायामर पूजिताय सुस्थपानांगाय नमोस्तु तस्मै।।6।।

ॐ ह्रीं स्थिति करणांगाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुरत्नवद्दुर्लभतामुपेतं भव्याव्यनोयत प्रतिमासमानं।
सुदुर्लभायामर पूजिताय वात्सल्यतांगाय नमोस्तु तस्मै।।7।।

ॐ ह्रीं स्थिति वात्सल्यतागांय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रवन्धभूयिष्टमलं चकार यच्छासनेशासित भव्यलोकः।
सुदुर्लभायामर पूजिताय प्रभावनांगाय नमोस्तु तस्मै।।8।।

ॐ ह्रीं स्थिति प्रभावहनांगाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूजा विशेषैर्वसु द्रव्यमानै यंत्रैः, सुमंत्रैः खुल द्रष्टि सिद्धयैः।
चोतरयाभ्यर्क्ष-मिदं जलाघैर्-वादित्र नादैः व्यवहार रूपैः।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यक् दर्शानाय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यक् दर्शन पूजा

(अनुष्टुप छन्द)

सौरभ्याहूत सद्भृंग, सारया जलधारया।
निःशंकितादिकान्यस्य, सदंगानि यजामहे।।1।।

ॐ ह्रीं निःशंकितादि भावनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चारूचन्दन काश्मीर, कर्पूरादि विलेपनै।
निःशंकितादिकान्यस्य सदंगानि यजामहे।।2।।

ॐ ह्रीं निःशंकितादिी भावनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षतैर्रक्षतानन्त सौख्य-दान-विधायकैः।
निःशंकितादिकान्यस्य सदंगानि यजामहे।।3।।

ॐ ह्रीं निःशंकितादि भावनाय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

जाति कुन्दादि राजीव चम्पकानेक पल्लवैः।
निःशंकितादिकान्यस्य सदंगानि यजामहे।।4।।

ॐ ह्रीं निःशंकितादि भावनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

खाद्य-माद्य पदैः स्वाद्यै सन्नाज्यैः सुकृतैरिव।
निःशंकितादिकान्यस्य सदंगानि यजामहे।।5।।

ॐ ह्रीं निःशंकितादि भावनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दशाग्रै प्रस्फुर-द्रूपै-र्दीपै-र्पुण्य जनैरिव।
निःशंकितादिकान्यस्य सदंगानि यजामहे।।6।।

ॐ ह्रीं निःशंकितादि भावनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूपैः संधूपतानेक कर्म्मभि-र्धूपदायिनां।
निःशंकितादिकान्यस्य सदंगानि यजामहे।।7।।

ॐ ह्रीं निःशंकितादि भावनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

नालिकेराम्र पूगादि फलै-र्पुण्य फलैरिव।
निःशंकितादिकान्यस्य सदंगानि यजामहे।।8।।

ॐ ह्रीं निःशंकितादि भावनाय फलं निर्व. स्वाहा।

जलं गंध कुसुममिश्रं, फल तंदुल कमल कलित ललिताढ्यं।
सम्यक्तकाय सुभव्यं भव्यां च कुसुमांजलिं दद्यात।।9।।

ॐ ह्रीं निःशंकितादि भावनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय नमः - ॐ ह्रीं निःशंकितांगाय नमः।।
ॐ ह्रीं निकांक्षित्येगाद नमः।। ॐ ह्रीं विर्विभित्सितायाय नमः।।
ॐ ह्रीं निर्मूढतांगाय नमः।। ॐ ह्रीं उक्युहतांगाय नमः।। ॐ ह्रीं सुस्थातकेरणांगाय नमः।।
ॐ ह्रीं जोपपगाय नमः।। ॐ ह्रीं प्रभावनागाय नमः।।

।। पुष्पांजलि ।।

जयमाला

(स्रग्धरः छन्द)

तत्त्वानां निश्चयो यश्तदिह निगदितं दर्शनं शुद्धबुद्धैस्।
तस्मादा-नष्टकर्माष्टक घन तिमरो जायते ज्ञान सूरः।।
ज्ञानात् सिद्धप्रसिद्धं भुवि वचनमिदं शास्वतं सिद्ध सौख्यं।
चंचद चंद्राश्रु शुभ्रं तदहमिह -महं दर्शनं पूजयामि।।

(चौपाई छन्द)

जय सम्यक दर्शन दर्शितास, कमलार्चित हतघन कर्म पास।
जय निःशंकित निश्चित सुतत्त्व, शत पत्र शतार्चित मुदित सत्त्व।।1।।

जय निःकांक्षित वर्जित विकार, कुन्दार्चित कृत संसार पार।
जय निर्विचिकित्सित भावभंग, कुमुद-प्रसून पूजित सुसंग।।2।।
जय जय निर्मूढ़ महा प्ररूढ़, शुभ चम्पक चर्चित चारु रूढ़।
जय जय उपगूहन परम पक्ष, जय मल्लिकार्च्य दर्शित सुलक्ष।।3।।
जय जय सुस्थित सुस्थीति-करण, जाती कुसुमार्चित दुःख हरण।
वात्सल्य मल्ल जय जय विशाल, केतकि दल पूजित जित कुकाल।।4।।
प्रतिभावनांग जय, जय बरेण, अष्टौविध पुष्प पूजित सुरेण।।

(घत्ता छन्द)

इति दर्शनमर्ग्रं भाव निनर्ग्रं, दर्शनमिष्ट-ममिष्ट हरं।
सुमनाशत पुंजं, सर्मनिकुंजं, भव्य जनाय ददातु वरं।।

(छन्द)

पंचातिचारातिशय प्रपूतं, पंचप्रदं पंचम बोध हेतुं।
सद्दर्शनं रत्न मनर्घ्य-मर्घैर्,-भक्त्या सुरत्नै-रहमर्चयामि।।

(शार्दूल विक्रीप्ति छन्द)

मुक्ता श्रेणिगता विभातिनितरां यत्प्रस्फुटत्तेजसा।
येनालंकृत विग्रहं गृह मुचं सिद्धयंगना मुंचति।।
यत्संसार महार्णवे भव भृतां दुःप्रापमाष्टच्छतः।
तत् सम्यक्त्व सुरत्न-मर्चितधियां देया-दनिंद्य पदं।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय इदं जलं गधं पुष्पांक्षतं चरुं दीपं धूपं फलं अर्घ्यं यजामहे स्वाहा।

(मालवी छन्द)

अतुल सुखनिधानं, सर्वकल्याण बीजं।
जनन जलधि पोतं भव्य सत्त्वेक पात्रं।।
दुरित तरु कुठारं पुण्य तीर्थं प्रधानं।
पिवतु जितु विपक्षं दर्शनाख्यं सुधांबु।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

अथ सम्यग्ज्ञान पूजा

प्रणम्य श्री जिनाधीश-मधीसं सर्व सम्पदां।
सम्यग्ज्ञानाय महारत्न पूजां वक्ष्ये विधानतः।।1।।
श्री जिनेन्द्रस्य सद्बिम्ब मुत्तरेण महाधियं।
पुस्तकं स्थापनीयं चेत्यस्यै वादर्श मध्यगं।।2।।
कल्पनाति गता बुद्धि पर भाव विभाविका।
ज्ञानं निश्चयतो ज्ञेयं तदन्यघ्र व्यवहारतः।।3।।

ज्ञानाचारोष्टधा पुंसां पवित्रीकरण क्षमः।
प्रभावेन तु पूजायै समागच्छतु निर्मलं।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार! अत्र मम अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

सम्यग्ज्ञान प्रभापूतं, कर्म कक्ष क्षयानलं।
पूजा क्षणेत्तु गृह्णातु, स्थित्त्वा पूजा मनिन्दितां।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार! अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं।

अचिन्त्य माहात्म्यचिन्त्य वैभवं भवार्णवोत्तीर्ण विषारिसर्वतः।
प्रबोध चारित्रमिहांतरंतरं निरन्तरं तिष्ठतु सन्निधौ मम्।।6।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अनुष्टुप छन्द)

सरदिन्दु समाकार सारया जलधारया।
बोध तत्त्व समाचार संयजे संयजावहं।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर नीर काश्मीर मिश्र सच्चदनैर्घनैः।
बोध तत्त्व समाचार संयजे संयजावहं।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शतपत्र शतानेक चारु चम्पक राजिभिः।
बोध तत्त्व समाचार संयजे संयजावहं।।3।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अखण्डे खण्डितानेक, दुरितैः शालितन्दुलैः।
बोध तत्त्व समाचार संयजे संयजावहं।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य, सनाज्यैः पुष्टि कारिभिः।
बोध तत्त्व समाचार संयजे संयजावहं।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंचत्कांचन संकासैः दीपैः सद्दीप्ति हेतुभिः।
बोध तत्त्व समाचार संयजे संयजावहं।।6।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु महाद्रव्यैधूपैः संधूपिताशुभैः।
बोध तत्त्व समाचार संयजे संयजावहं।।7।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूग नारंग जम्भीर मातुलिंग फलोत्करैः।
बोध तत्त्व समाचार संयजे संयजावहं।।8।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहाद्रि संकट तटी विकट प्रपाता, सम्पादने सकलसत्त्व हितंकराय।
बोधाय शक्र शुभ हेतु समप्रभाय, पुष्पांजलिं प्रविमलंह्यवतारयामि।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्ज्ञानाचार अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं सम्यग्वोध तत्त्वाय इदं जलं गंधाक्षतं पुष्पं चरु दीपं धूपं फलं अर्घ्यं यजामहे स्वाहा।

अंग पूजा

सुव्यंजनै व्यंगित व्यंग भाव प्रभावनाभावित भाव वृद्धं।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोध तत्त्वाय नमोस्तु तस्मै।।1।।

ॐ ह्रीं व्यजनं व्यंजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यदर्थ सम्बन्ध मुपेत्यनीतं समग्रतामग्र पद प्रदायि।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोध तत्त्वाय नमोस्तु तस्मै।।2।।

ॐ ह्रीं अर्थ समग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थार्थ श्रद्धान वितान मान द्वयेन बधं सुनिबंधमेति।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोध तत्त्वाय नमोस्तु तस्मै।।3।।

ॐ ह्रीं तदुभय समग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवित्रकालाध्ययन प्रभाव, प्रदर्शितानेक कला कलापं।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोध तत्त्वाय नमोस्तु तस्मै।।4।।

ॐ ह्रीं कालाध्ययन पवित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समृद्ध शुद्धोपधि शुद्धमिद्धं, सुभामंवतः स्फुरदंग संगः।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोध तत्त्वाय नमोस्तु तस्मै।।5।।

ॐ ह्रीं उपध्यानोपहिपहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनीतचेतो वितनीत नीति, प्रणीतमानंत्य-मनन्तरूपं।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोध तत्त्वाय नमोस्तु तस्मै।।6।।

ॐ ह्रीं विनय लब्ध प्रभावनांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपक्रुते निक्रुततो गुरूणां, गुरु प्रभावा प्रहतांधकार।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोध तत्त्वाय नमोस्तु तस्मै।।7।।

ॐ ह्रीं गुर्वाद्यपह्नाव समृद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकधामान्य वितान वृद्धं, प्रभावितानन्त गुणं गुणानां।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोध तत्त्वाय नमोस्तु तस्मै।।8।।

ॐ ह्रीं बहुमानोनमुद्रिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतीव दुःखाशुभ कर्मनाश प्रकाशिताशेष विशेषणाया।
सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोध तत्त्वाय नमोस्तु तस्मै।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्यग्ज्ञान पूजन

सौरभ्याहूत सद्भृंग, सारया जलधारया।
व्यंजनाद्यमलिंगानि संयजे जन्मच्छिदे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चारूचन्दन कश्मीर, कर्पूरादि विलेपनै।
व्यंजनाद्यमलिंगानि संयजे जन्मच्छिदे।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षतैर्रक्षतानन्त सौख्य-दान-विधायकैः।
व्यंजनाद्यमलिंगानि संयजे जन्मच्छिदे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय अक्षयपदप्राप्ते अक्षतं निर्व. स्वाहा।

जाति कुन्दादि राजीव चम्पकानेक पल्लवैः।
व्यंजनाद्यमलिंगानि संयजे जन्मच्छिदे।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

खाद्य-माद्य पदैः स्वाद्यै सन्नाज्यैः सुकृतैरिव।
व्यंजनाद्यमलिंगानि संयजे जन्मच्छिदे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दशाग्रै प्रस्फुर-द्धूपै-र्दीपै-र्पुण्य जनैरिव।
व्यंजनाद्यमलिंगानि संयजे जन्मच्छिदे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूपैः संधूपतानेक कर्म्मभि-र्धूपदायिनां।
निःशंकितादिकान्यस्य सदंगानि यजामहे।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

नालिकेराम्र पूगादि फलै-र्पुण्य फलैरिव।
निःशंकितादिकान्यस्य सदंगानि यजामहे।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

जलं गंध कुसुममिश्रं, फल तंदुल कमल कलित ललिताढ्यं।
सम्यक्तकाय सुभव्यं भव्यां च कुसुमांजलिं दद्यात।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्ज्ञानाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ॐ ह्रीं व्यंजन व्यंजिताय नमः। ॐ ह्रीं अर्थसग्राय नमः। ॐ ह्रीं तदुभर्जसमग्राद नमः। ॐ ह्रीं कालाध्ययन पवित्राय नमः। ॐ ह्रीं उपध्यानोपहिताय नमः। ॐ ह्रीं विनयासन्धि प्रभावाय नमः। ॐ ह्रीं गुवधिपन्व समृसाय नमः। ॐ ह्रीं बहुमानोः मुद्रिताय नमः।

जयमाला

व्योम्नीव व्यक्त रूपं विगतघनमलं भाति नक्षत्र-मेकं।
जीवा-जीवादि तत्त्वं स्थगित गतमलं यस्य दृग्गोचरस्थं।।
तत्त्वज्ञैः प्रार्थते यत् प्रविपुल मतिभिः मोक्ष सौख्याय जज्ञे।
तद्भव्यां भोजनानु वरमहित-महे बोध सभ्यर्च्चयामि।।

(छन्द)

घन मोहतमः पटलाप हरं, जन संजम संगम भारधुरं।
भुवि भव्य पयोज विकाशनहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं।।1।।
कृत दुष्कृत कौसिक चारु हरं, भृत भूरि भवार्णव शोष करं।
भुवि भव्य पयोज विकाशनहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं।।2।।
निखिलामलवस्तु विकाश पदं, हृत दुर्धर दुर्जय यष्ट पदं।
भुवि भव्य पयोज विकाशनहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं।।3।।
कलि कल्मष कर्दम शोष करं, हृदयादव सपित कर्मजलं।
भुवि भव्य पयोज विकाशनहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं।।4।।
जड़ता-मपहार विहाय समं, सुमनोद्भव संगविभंग भमं।
भुवि भव्य पयोज विकाशनहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं।।5।।

हृदयामल लोचन लक्षमितं, निजभासुर भानु सहस्र युतं।
भुवि भव्य पयोज विकाशनहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं।।6।।
अलिकज्जलनील तमात्म तयं, प्रति-मर्द्धिक भावनि सापगमं।
भुवि भव्य पयोज विकाशनहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं।।7।।
निज मण्डल मण्डित लोक मुखं, नत सत्त्व समर्पित सर्व सुखं।
भुवि भव्य पयोज विकाशनहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं।।8।।
स्तुत्वेति बहुधा स्तोत्रेर्यहु भक्ति पटायणाः।
ननां भव्ये समं धीमान् अर्घ्यं चापि सुमुद्धरेत।।9।।

(छन्द)

संसार पाथो निधि सौख्य कारी, प्रबन्ध भूयिष्ठ-मनंत रूपं।
संज्ञान रत्नं बहुयत्न भृंगैः रत्नै सुभैरर्पित-मर्चयामि।।

ॐ ह्रीं सम्यक् बोध तत्पाय इदं जलं गधं पुष्पं अक्षतं चरु दीपं फलं अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नाञ्जलि

चिंता मूल महा दृढस्तदमल स्थूल स्थल स्कन्ध मान।
नांगो पांग सदागमैकविसरत् साखोप साखार्चिता।।
नाना नेक विधावधि प्रभृतभिः सत्पात्र पुष्पै वरैः।
देयाद्बोध तरु सदाशिव सुखा न्यासेवितोनेकशः।।

दुरित तिमिर हंसं मोक्ष लक्ष्मी सरोजं, मदनभुजगमंत्रं चित्तमातंगसिंहं।
व्यसन घन समीरं विश्व तत्त्वैक दीपं, विषय सफर जालं ज्ञानमाराधयत्त्वं।।

इत्याशीर्वादः

अथ चारित्र पूजा

देव श्रुत गुरुन्नत्वा कृत्त्वाशुद्धि-मिहात्मनः।
सम्यक चारित्र रत्नस्य वक्ष्ये संक्षेपतोर्चनं।।
सम्यक् रत्नत्रयस्याथ पुस्तकं चोत्तरेणतु।
गणेश पादुका युग्मं स्नापायित्त्वा महोत्सवे।।
गौणं चारित्र-माख्यातं यत् सावद्य निवर्तनम्।
आनन्द साद्रमांद्रात्मा पवित्र परमार्थतः।।

त्रयोदश विधानेक भव्य लौकेक पावनं।
चारित्राचार कर्मेत कमलं विमलं शिवः।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार! अत्र मम अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

कर्म महाकुल पर्वतः, प्रकट कूट विभंजन सत्यपि।
यइह तिष्ठतु तिष्ठुत मन्मथः कमल मेष चरित्र महामहः।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार! अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं।

सकलभव्य पयोजविकाशकृत, प्रकटिताऽखिलभाव विभावकः।
प्रवलमोठ निशाचर चारहृत, चरण मानु-रुदेतु मनों वरे।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

सरदिन्दु समाकार, सारया जलधारया।
सच्चारित्र समाचारं, संयजे सयजावहं।।1।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार इदं जलं नि. स्वाहा।

कर्पूर नीर काश्मीर-मिश्रस् सच्चदनैधनैः।
सच्चारित्र समाचारं, संयजे सयजावहं।।2।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार इदं चन्दनं नि. स्वाहा।

शतपत्र शतानेक, चारु चम्पक राजित्रिः।
सच्चारित्र समाचारं, संयजे सयजावहं।।3।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार इदं अक्षतं नि. स्वाहा।

अखण्डे खण्डितानेक, दुरितैः शालि तन्दुलैः।
सच्चारित्र समाचारं, संयजे सयजावहं।।4।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार इदं पुष्पं नि. स्वाहा।

न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य, सनायैः पुष्टि कारिभिः।
सच्चारित्र समाचारं, संयजे सयजावहं।।5।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार इदं नैवेद्यं नि. स्वाहा।

चंचत्कांचन संकासै, दीपः सद्दीप्ति हेतुभिः।
सच्चारित्र समाचारं, संयजे सयजावहं।।6।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार इदं दीपं नि. स्वाहा।

कृष्णागरु महाद्रव्य, धूपै संधूपिता शुभैः।
सच्चारित्र समाचारं, संयजे सयजावहं।।7।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार इदं धूपं नि. स्वाहा।

पूग नारंग जम्भीर, मातुलिंग फलोत्करैः।
सच्चारित्र समाचारं, संयजे सयजावहं।।8।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यकचारित्राचार इदं फलं नि. स्वाहा।

कर्मणि हि महारोग, नराणां यत्प्रयोगतः।
सच्चारित्रौषधायस्मै, ददामि कुसुमांजलिं।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विधः सम्यकचारित्राचार इदं अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अर्घ्यावली

प्राणाति पातादि्वरति, रूपं सर्वत्र तत्त्वतः।
पूजयामि समीचीनं, चारित्राचार-मर्चितम।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसा पूआ महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असत्यविरते प्राप्त, परभाव मनेकधः।
पूजयामि समीचीनं, चारित्राचार-मर्चितम।।2।।

ॐ ह्रीं असत्य-विरति महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौर्याद्याव्रत व्रत्तात्मा, सर्वथा सुमनीषणां।
पूजयामि समीचीनं, चारित्राचार-मर्चितम।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्य विरति महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्राम्य धर्मविनिर्मुक्तं यद्ववंद्यस्त्रिदशैरपि।
पूजयामि समीचीनं, चारित्राचार-मर्चितम।।4।।

ॐ ह्रीं मैथुन विरति महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वग्रहायानमूर्छा मुक्त,-मनेकाग्र आलोभुद।
पूजयामि समीचीनं, चारित्राचार-मर्चितम।।5।।

ॐ ह्रीं परिग्रह विरति महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव विध दोष विमुक्तं, पंच महाव्रत पालने दक्षं।
धिक त्रय कृत धरं ते, चोयेऽहं 'विशद' दिकभावेन।।6।।

ॐ ह्रीं पंचमहा व्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच विधचारित्र पूजा

सौरभ्याहृत सद्भृंग, सारया जलधारया।
अहिंसाव्रत पूर्वाणि भजम्यंगानिसं मुदा।।1।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक् चारित्राचाराय इदं जलं निर्व. स्वाहा।

चारूचन्दन कश्मीर, कर्पूरादि विलेपनै।
अहिंसाव्रत पूर्वाणि भजम्यंगानिसं मुदा।।2।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक् चारित्राचाराय इदं चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षतै रक्षतानन्त सौख्यदान विधाय कैः।
अहिंसाव्रत पूर्वाणि भजम्यंगानिसं मुदा।।3।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक् चारित्राचाराय इदं अक्षतं निर्व. स्वाहा।

जाति कुन्दादि राजीव चम्पकानेक पल्लवैः।
अहिंसाव्रत पूर्वाणि भजम्यंगानिसं मुदा।।4।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक चारित्राचाराय इदं पुष्पं निर्व. स्वाहा।

स्वाघ माद्य पदैः स्वाद्यै सन्नाज्यैः सुकृते-रिव।
अहिंसाव्रत पूर्वाणि भजम्यंगानिसं मुदा।।5।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक चारित्राचाराय इदं नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दशाग्रै प्रस्फुरद्धूपै दीपै पुण्य जनैरिव।
अहिंसाव्रत पूर्वाणि भजम्यंगानिसं मुदा।।6।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक चारित्राचाराय इदं दीपं निर्व. स्वाहा।

धूपै संधूपतानेक कर्म्मभि धूप दायिनां।
अहिंसाव्रत पूर्वाणि भजम्यंगानिसं मुदा।।7।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक चारित्राचाराय इदं धूपं निर्व. स्वाहा।

नालि केराम्र पूगदि फलै पुण्या फलैरिव।
अहिंसाव्रत पूर्वाणि भजम्यंगानिसं मुदा।।8।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक चारित्राचाराय इदं निर्व. स्वाहा।

कर्मणोहि महारोगान्-नराणां यत् प्रयोगतः।
सच्चारित्रौषधा यस्मै, ददामि कुसुमांजलिं।।9।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक चारित्राचाराय इदं अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(5 समिति)

ईर्या समिति संशुद्ध-मतीचार विवर्जितं।
पूजयामि समीचीनं चारित्राचारमर्चितं।।1।।

ॐ ह्रीं ईर्या समितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्विध महाभाषा शुद्ध संयम संगतं।
पूजयामि समीचीनं चारित्राचारमर्चितं।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विध भाषा समितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एषणाभ्युद्धि संसुद्धै, यत् प्रवृद्धं विभागतः।
पूजयामि समीचीनं चारित्राचारमर्चितं।।3।।

ॐ ह्रीं ऐषणा समितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्मित्रन्नादान निक्षेपैः, सतां संयम वृद्धये।
पूजयामि समीचीनं चारित्राचारमर्चितं।।4।।

ॐ ह्रीं यस्मिन्नादान समितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युसर्गेण विशुद्धं यत्, कर्म व्युत्सर्गकारणं।
पूजयामि समीचीनं चारित्राचारमर्चितं।।5।।

ॐ ह्रीं व्युसर्ग समितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवविध दोष विजुक्तं अष्टौशील धरानगारं।
चायेऽहं मुनिनाथं जलादि 'विशद' द्रव्यैः।।

ॐ ह्रीं अष्टौशीलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन गुप्ती

अधृथं सर्व लोकानां यन्मनस्त नियामकं।
पूजयामि समीचीनं चारित्राचारमर्चितं।।1।।

ॐ ह्रीं मनो गुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यद्वाग् व्यापारजानेक, दोष संग विवर्जितं।
पूजयामि समीचीनं चारित्राचारमर्चितं।।2।।

ॐ ह्रीं वचन गुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरीराश्रव संचारा परिहार विनिर्मलं।
पूजयामि समीचीनं चारित्राचारमर्चितं।।3।।

ॐ ह्रीं काय गुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टशील व्रत पूजा

सरदिन्दु समाकार सारया जलधारया।
अष्टौशील प्रपूर्वाणि यजाम्यंगानिसं मुदा।।1।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्चार जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर नीर काश्मीर मिश्र सच्चदनैर्घनैः।
अष्टौशील प्रपूर्वाणि यजाम्यंगानिसं मुदा।।2।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्चार चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शतपत्र शतानेक चारु चम्पक राजिभिः।
अष्टौशील प्रपूर्वाणि यजाम्यंगानिसं मुदा।।3।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्चार अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अखण्डे खण्डितानेक दुरितैः शालितन्दुलैः।
अष्टौशील प्रपूर्वाणि यजाम्यंगानिसं मुदा।।4।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्चार पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य सन्नाज्यैः पुष्टि कारिभिः।
अष्टौशील प्रपूर्वाणि यजाम्यंगानिसं मुदा।।5।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्चार नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंचत्कांचन संकासै दीपैः सद्दीप्ति हेतुभि।
अष्टौशील प्रपूर्वाणि यजाम्यंगानिसं मुदा।।6।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्चार दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु महाद्रव्य धूपै संधूपिताशुभैः।
अष्टौशील प्रपूर्वाणि यजाम्यंगानिसं मुदा।।7।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्चार धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूग नारंग जम्भीर मातुलिंग फलोत्करैः।
अष्टौशील प्रपूर्वाणि यजाम्यंगानिसं मुदा।।8।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टविध सम्यग्चार फूलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मणि हि महारोग नराणां यत्प्रयोगतः।
यत्चारित्रौषधायस्मै ददामि कुसुमांजलिं।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विधः सम्यकचारित्राचार इदं अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

ॐ ह्रीं अहिसा पूर्व महाप्रत्यय नमः। ॐ ह्रीं असत्यविरति महाप्रत्यय नमः।
ॐ ह्रीं चौर्य विरति महाप्रत्यय नमः। ॐ ह्रीं मैथुन विरति महाप्रत्यय नमः।
ॐ ह्रीं परिग्रह विरति महाप्रत्यय नमः। ॐ ह्रीं ईया समितये नमः।
ॐ ह्रीं भाषा समितये नमः। ॐ ह्रीं रंजणा समितये नमः।
ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समितये नमः। ॐ ह्रीं प्रतिष्ठा वन समितये नमः।
ॐ ह्रीं मनो गुप्तये नमः। ॐ ह्रीं बाग गुप्तय नमः। ॐ ह्रीं काय गुप्तये नमः।

जयमाला

(स्रगधरा छन्द)

नद्वेषोद्वेष वृत्तिन्यरुण दृशि कृतानेक घोरोपशर्गे।
यस्मिन रागोपिनस्यान् मलयज कुसुमं दीयते भक्ति भाजा।।
स्वर्णे जीर्णे तृणे वा भवति समुतुलापुण्य पापा श्रयेपि।
सम्यकचारित्र मेतत् तदहमिहमहे पूजयाया-दरेण।। 1।।

(अनुष्टुप छन्द)

स्वात्मानं योगिनो यस्माल्लभंते शुद्ध चेतसः।
नमः समस्त साराय, चारित्रायामलत् विषे।।1।।
यानि कानि तु सौख्यानि, जायन्ते तानि तद्वसात।
नमः समस्त साराय, चारित्रायामलत् विषे।।2।।
दौर्गतानित दुःखानि, यदृते लभते नतः।
नमः समस्त साराय, चारित्रायामलत् विषे।।3।।
लोकालोक विभागात्मा, यतः प्राप्नेति केवलं।
नमः समस्त साराय, चारित्रायामलत् विषे।।4।।
यच्छ्द्धा नान्तृणां जन्म, सकलं सफलं भवेत्।
नमः समस्त साराय, चारित्रायामलत् विषे।।5।।
लक्ष्मी लोचन लक्ष्यागं, यत्करोति नरं वरं।
नमः समस्त साराय, चारित्रायामलत् विषे।।6।।
चीक्रभिस्तीर्थकतूर्ण तृणां, येनां च तिपदं नरः।
नमः समस्त साराय, चारित्रायामलत् विषे।।7।।
मुक्तायन्नमि परं किंचिद्योगिनो मनिन्दितं।
नमः समस्त साराय, चारित्रायामलत् विषे।।8।।
विधायेत्थं मनः पूजां चारित्रस्य विशुद्धधी।
करोमिपूर्ववत् सर्वं, मर्घादिक मनिन्दितं।। 9।।

स्तुत्वेति बहुधास्तोत्रैर्, बहु भक्तिपरायणाः।
नाना भव्यै समं लोकैः करोत्यानन्द नाटनं।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश विधः सम्यकचारित्राचार इदं जलं गधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं अर्घ्यं यजामहे स्वाहा।

(वसन्ततिलका छन्द)

अलंकृतांयेन सदाश्रंयति, सत्साधवः सिद्धवधूवरत्वं।
मालामुपाक्षिप्य सुरत्नपूतां, चारित्र रत्नं परिपूजयामि।।

रत्नांजलि

(शार्दूल विक्रीडित छन्द)

अन्तर्लीन मलीमसप्रसर जिल्लीलोल्लसत्केवलं।
लोकालोक विलोक नक्र मगुण, ग्रामेक शुद्धा नमत्।।
येना लंकृत विग्रहाक्षणमपिच्क्षीणा नरानिर्मला।
नैर्मल्यं प्रति पद्य शास्वत तमं, वंदे चरित्रं च तत्।।

आशीर्वादः

(अनुष्टुप छन्द)

ततोपि गुरुणां दत्ता, माशिषं सिरसा सुधी,
गृहणाति गृहनिर्मुक्तो, युक्तये व्रत कारकः।
अनन्तानन्त संसार, कर्म विच्छिप्ति कारकं।
देयाद्वः सम्पदः श्री, मच्चरणं शरणं नृणां,
विरम-विरम संगान् मुंच-मुंच प्रपंचः।।
विसृज-2 मोहं विधं-विधं स्व तत्त्वं।
कलय-2 यतृत्तं पश्य-2 स्वरूपं।।
कुरू कुरू पुरुषार्थं निवृतानन्द हेतोः।।

इत्याशीर्वादः

जाप्य - ॐ ह्रीं अहो अष्ट सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्रभ्यो नमः।

रत्नत्रय समुच्चय जयमाला

रयणत्तय सारउ, भव्य पियारउ, सयलयह जीवह दुरिय हरो।
मुणियण गण महिमय, गुण गण सहियउ, मिच्छ मोह मयणासयरो।।1।।
पणवीस दोष सयजिउ पवित्तु, अयियार रहिउ वसुगुण विजुत्त।
अट्ठंगई णिम्मल विप्फुरंति, जो तिरहं देवत्तण विलिंति।।2।।

णारइय बितित्थयरा हवंति, देव विए इंदिउ पउ लंहति।
जे मिच्छत्तय सम्मत्त हीण, दालद्दिय णासिय ते धणीण।।3।।
मइ सुय अवही मणपज्ज णाण, केवलु विकहिज्जइ मइ पवाण।
अण्णाणे तिणय भणइ जोइ, कुच्छिय मिच्छत्तय जइ सहोइ।।4।।
वो-मुव णिम्मल पवणु वि असंग, परि अजिउ विकणयर मुत्ति संग।
लोयालोहय विजयउ णिऊइ, बहु भेयहं जउ चारित्त होइ।।5।।
पंचाइ महव्वय समिदि पंच, गुणउ तिण्णि पय जिय अवंच।
पुण पंचायारति भेय जुत्त, मुणि धम्म कहहिं देविन्द वुत्त।।6।।

(घत्ता छन्द)

जिहिं तिणि विण रचिरु, गहण सुणे मुई, अंधउ, आलस्सउ पंगुल।
वि जिणवर भासिय, धर्म विकासिय, तइ विणु मुत्ति ण, भणई गणी।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र रत्नत्रय धर्मेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

शांतिं पुष्टिं च तुष्टिं च, कल्याणं चरं सौख्यदं।
विशदं मोक्षदं कार्यं, रत्नत्रयं संपूजये।।

इत्याशीर्वादः

आदित्यवार पूजा स्तवन

(बसन्त तिलका छन्द)

इक्ष्वाकु वंश कुल मण्डन अश्व सेनो
तद्वल्लमाप्रतिव्रता जिन वाम देवी!
तस्थानजं विमल मूर्ति सुरेन्द्र वंद्यं।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।1।।
नागेन्द्र विडु वर लाक्षण केतु शोभा।
पद्मावती धरण यक्षति सेव्य मानम्।।
वाणारसी विदित श्री जिन जन्म थानं।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।2।।
गर्भावतार समये, सुर पुष्प वृष्टिः।
कौमारिका विविध षट् पता सेव्यमानं।।
मातुः प्रसूति जिन निर्गत मुक्ति शक्तिः।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।3।।

जन्माभिषेक वर मंगल पूजनार्थं
शक्रानि पाण्डुक शिला गत हर्ष पूर्व्वं
क्षीरोदकं कलश अष्ट सहस्र पूज्यं।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।4।।
क्षत्रत्रयं तरु - मसोक त्रिमासनं च।
भामण्डलं चतुरष्ट सुचामराणि।।
दिव्य-ध्वनि विविध-दुन्दुभि पुष्पवृष्टिः।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।5।।
कंदर्प्प दर्पमद भंजन धीर वीरं।
उद्धारनयुगल सर्व नव प्रधानं।।
मिथ्या मतीक मठ निष्ठुर मानहारी।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।6।।
तृष्णा क्षुधा जनन मोहन राग द्वेषं।
चिंता रुजा भयमदो रति मृत्यु निद्रा।।
शेषं नविस्मय जरा न च खेद स्वेदं।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।7।।
इत्याष्टकं विविध भक्ति करोमि नित्यं।
तेषां लंभति फल वांछिति भाव पूर्व।।
श्रीकल्प वृक्ष समदानि जिनेन्द्रभद्रं।
त्रैलोक्य नाथ जिन पार्श्व पदं नमामि।।8।।

इति गदित विधानं, माननी मुक्त पूर्वं, वरन वरन पुष्पं, देव देवेन्द्र वद्यं।
पठति विमलभावं देय पुष्पांजलिं च, दिनकर व्रतपूजा स्थापये पार्श्वनाथं।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः तस्योपरि पुष्पांजलिं
पिवेत् इत्याह्वाननं अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो
भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
अथाष्टक

रत्नत्रय व्रत कथा

श्रीमन्सन्मतिं नत्वा गौतमं च गणाधिपं।
मच्छकः श्रेणिको राजा विनयान्नतमस्तकः।। 1।।
केनेदं विहितं नाथ रत्नत्रयमिदं व्रतं।
कीदृक्फलं च तेनाप्तं तद्व्रतं कथय प्रभो।। 2।।
अथाव गौतमस्वामि दिव्यंगभीरया गिरा।
भव्यं पृष्टं त्वया राजन् श्रुणु त्वं कथयामि ते।।3।।
जंबूवृक्षांकिते जंबूद्वीपे द्वीपेषु मध्यगे।
लक्षयोजनविस्तीर्णे क्षेत्रं भारतसंज्ञकं।। 4।।
तस्यास्ति पूर्वदिग्भागे द्वितीयं क्षेत्रमुत्तमम्।
नाम्ना पूर्वविदेहं च धर्मिजनैः समाकुलं।। 5।।
पुष्कलावतिप्रमुखानेकदेशसमन्वितं।
पवित्रं क्षेत्रमत्यन्तं पुरपत्तनशोभितं।। 6।।
राजा वैश्रवणस्तत्र सम्यक्त्वालंकृतः सुधीः।
तेनेदं च कृतं पूर्वं व्रतं रत्नत्रयामिधं।। 7।।
तत्फलेनैव संबद्धं तीर्थंकृतकुलमुत्तमम्।
ततः समाधिना मृत्वाहमिंद्रोऽभूतो भूपतिः।। 8।।
तस्माच्युत्वायुषांते सः बंगदेशे मनोहरे।
मिथुलाक्षापूरिरम्या तस्यां कुंभाभिधो नृपः।। 9।।
राज्ञी प्रभावती दक्षा तद्गर्भे सोऽवतीर्णोवान्।
रत्नत्रयप्रभावेन मल्लिनाथो जिनेश्वरः।। 10।।
स जातः कर्मनियोगः पंचकल्याणनायकः।
इति मत्वा बुधैः कार्यं रत्नत्रयमिदं व्रतं।। 11।।
तस्य पूजा विधिर्वक्ष्येऽईन्नामाष्टसहस्त्रकं।
पठित्वा देहशुद्ध्यर्थं सकळीकरणं पठेत्।। 12।।
पूजयेत् प्रथमं देवं सिद्धादिपंचनायकान्।
वेदिमण्डपयो शोभां कृत्वा पूजां तयोर्मुदा।। 13।।
गुर्वाज्ञां च समादाय स्वस्तिकेनास्य भक्तिवः।
रत्नत्रयस्य यद्धिवं चतुर्विंशतिसंयुतं।। 14।।

तदग्रे विधिना स्थाप्यं सम्यक् यत्रत्रयं शुभं।
संस्त्राप्य विधिना तत्र वृत्तानामर्चयेत्पुनः।। 15।।
स्वस्तिकं सुन्दरं कृत्वा त्रिनवतिसुकोष्टकैः।
तद्वतोद्यापनं कुर्यात् भक्त्या शक्त्या शिवै पदै।। 16।।
नित्वाज्ञां प्रथमै गुरोरपि ततः पूजां समारभ्यते।
तत्रादौ च सहस्त्रनामसकळीकरणं त्रिशुद्धया पठेत्।।
पश्चात् श्रीजिनदेवसिद्धकळिकुण्डादिश्रुतार्चा गुरोः।
कृत्वानुक्रमतोऽर्चनं च विधिना दृग्वोधवृतै यजेत्।। 17।।
अस्योद्यापन सद्विधौ च मण्डपादि स्वस्तिकस्यार्चनं।
कर्तव्यं स्त्रपनं पठेत्सुविधिना पंचामृतैर्भक्तितः।।
कार्यो च ध्वजसंघ पूजकरणं ताबूलदानादिकं।
कुर्यात्रांकुहरोपणादि विविधैर्वाद्यैश्च सन्तोरणैः।। 18।।
आहाराभ्यभैषजं च मुनये सच्छास्त्रदानं तथा।
पात्रेभ्यो विनयांचतुर्विधमिदं दानं प्रदेयं बुधैः।।
स्तुत्याशीर्वरणीतमंगलश्वैः कार्ये व्रतोद्यापनै।
इत्युद्यापनसद्विधिश्च गणिनोक्तश्रेणिकाग्रे पुरा।। 19।।

अथ रत्नत्रय उद्यापन

अथातः संप्रविक्ष्यामि तेषां सद्गुणपूजनं।
कर्णिका मध्यभागे च पूजयेत् द्रव्यसत्तमैः।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयधर्मपूजनाय स्वस्तिकोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

आह्वाननस्थापनसन्निधानैः संस्थापयाम्यत्र सवीजवर्णैः।
सद्दर्शनस्यापि सुयंत्रराजं राप्यं तथा हेममयं च ताम्रं।।

ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनअत्रावतरावतर संवौषट्। स्थापनं सन्निधिकरणं।।

गंगादितीर्थोदक हेम कुंभैः, प्रच्छालिप्त श्री जिनपाद पद्मैः।
श्री पार्श्वनाथस्य रविव्रताय, ददेमुदानिर्मताक्षीर धारै।। 1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीर सत् कुंकुम चन्दनाद्यैः, शतै सुगधैर्-घन सारमिश्रैः।
श्री पार्श्वनाथस्य रविव्रताय, ददेमुदानिर्मताक्षीर धारै।। 2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखण्डितै रक्षत पंचपुंजैर्युक्ताफलै ज्योति समान पूरै।
श्री पार्श्वनाथस्य रविव्रताय, ददेमुदानिर्मताक्षीर धारै।। 3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दावदातैः कलिका प्रसूनैः, सर्त्पूष्पतै पुष्पित बेलि वगैः।
श्री पार्श्वनाथस्य रविव्रताय, ददेमुदानिर्मताक्षीर धारै।। 4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पक्वात्म शाल्योदन क्षीर पूरै, नाना रसैर्विजन हेम पात्रैः।
श्री पार्श्वनाथस्य रविव्रताय, ददेमुदानिर्मताक्षीर धारै।। 5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर दीपैः कनकावदातैः, ज्योर्तिप्रकाशै तम मोह नाशै।
श्री पार्श्वनाथस्य रविव्रताय, ददेमुदानिर्मताक्षीर धारै।। 6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागटैश्यंदन धूप वगैः, गंजोतयैर्गुंजित दिग्विभागै।
श्री पार्श्वनाथस्य रविव्रताय, ददेमुदानिर्मताक्षीर धारै।। 7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्तमै श्री फलमातु लिंगै, नारंग पूगी कदलैर्विचित्रैः।
श्री पार्श्वनाथस्य रविव्रताय, ददेमुदानिर्मताक्षीर धारै।। 8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः फूलं निर्वपामीति स्वाहा।

कद् वारि गंधैः कुसुमै सुशाल्यैश्चरू प्रदीपैः फलधूपअर्घ्यैः।
श्री पार्श्वनाथस्य रविव्रताय, ददेमुदानिर्मताक्षीर धारै।। 9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जय-जय जग वन्दन, कर्म निकन्दन, वामा नन्दन धरहुमना।
रविव्रत पर काशन भवमय नाशन, दु:ख विनाशन सुख कारण।।
जय जगता नन्दन जगतसार, जय वन्दन ज्योति अपार पार।
जग जीवन प्राण आधार संत, जय दिन करतस्थ उपदेश वंत।। 1।।
जग नायक लायक जग प्रधान, जग मण्डन समवशरण विमान।
जन पत्र गलावन धुज लसंत, जय दिन करतस्थ उपदेश वंत।। 2।।
जग मोहन जग शासन जिनन्द, जग शोभन जग आनन्द कंद।
जग कुमुद शिरोमणि गुण अनन्त, जय दिन करतस्थ उपदेश वंत।।3।।
जग जोति दिवाकर जग उद्योग जग वार, उतादन जलधि पोत।
जग चद्रकला मृत नीकरत, जय दिन करतस्थ उपदेश वंत।। 4।।
जय इन्द्र नरेन्द्र फणेन्द्र सेव, जय त्रिभुवन पति देवाधि देव।
जय सिद्ध वधूवर नारिकंत, जय दिन करतस्थ उपदेश वंत।। 5।।
जय रति पति भय भंजन प्रवीन, कमवेश महाशह करन दीन।
जुग चरण कमल वन्दन महन्त, जय दिन करतस्थ उपदेश वंत।। 6।।
जय पब्रगवाष्ठुक नागराज धरनी धर सेवहि बहु समाज।
सब नक्षक रक्षक जीव जन्तु, जय दिन करतस्थ उपदेश वंत।। 7।।
जय डाकिनि शाकिनि जांहि नाश, रिपुभूत पिशाचन कर हित्रास।
सब रोग शोक भाजहि तुरंत, जय दिन करतस्थ उपदेश वंत।। 8।।
मति आगर सेठ सुव्रत प्रभाव, गुणधर अवधीपुरि भयउराउ।
पुवि आनि कुटंव संग सुख तहंत, जय दिन करतस्थ उपदेश वंत।।9।।
वह रविव्रत महिमा कहि न जाय, तुम कीजहु भवि मनवचन काय।
कह लाल विनोदीय सुणहुँ संत, जय दिन करतस्थ उपदेश वंत।। 10।।

(धत्रा छन्द)

इति रविव्रत पूजा, सुरपद दूजा, जे करंत नव वर्ष लहीं।
मन वच कुम ध्यावहि, सुरपद पावहि पार्श्वनाथ फल देत सही।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ धरणेन्द्र नम: नि. स्वाहा।

इक्ष्वाकी वर वंश भूवन नृपो, श्री अश्वसेनो नुज:।
वामा नन्दन इन्दु चंद्र धरनी, संसेव्य मानं सदा।।
प्रत्यार्हाय विभूपतं वसु वुधि कल्याण कारी सदा।
ते तुभ्यं विद धातु वांछित फलं श्री पार्श्वकल्पद्रुमण।।

इत्याशीर्वाद:

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।